PAYAL K SUMAN

AGAIN *For you*

BlueRose ONE.com
Stories Matter
NewDelhi • London

BLUEROSE PUBLISHERS
India | U.K.

Copyright © Payal K Suman 2025

All rights reserved by author. No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without the prior permission of the author. Although every precaution has been taken to verify the accuracy of the information contained herein, the publisher assumes no responsibility for any errors or omissions. No liability is assumed for damages that may result from the use of information contained within.

BlueRose Publishers takes no responsibility for any damages, losses, or liabilities that may arise from the use or misuse of the information, products, or services provided in this publication.

BlueRose ONE.com
Stories Matter
NewDelhi • London

For permissions requests or inquiries regarding this publication, please contact:

BLUEROSE PUBLISHERS
www.BlueRoseONE.com
info@bluerosepublishers.com
+91 8882 898 898
+4407342408967

ISBN: 978-93-7139-816-9

Cover design: Daksh
Typesetting: Tanya Raj Upadhyay

First Edition: September 2025

कहानी परिचय

यह कहानी सिर्फ दो लोगों के प्यार में, टाइम ट्रैवल करके एक दूसरे को पाने की कोशिश पर हीं केंद्रित नहीं है। बल्कि, लड़कियों के आत्म सम्मान, लोगों की पुरानी सोच और विवाह जैसे पवित्र बंधनों का मजाक उड़ाने वाले आजकल के युवाओं की भी है। इस कहानी में उन लोगों पर भी सवाल उठाया गया है, जो लड़कों को गलत करने से नहीं रोकते, और ना हीं कोई पाबंदियां लगाते हैं। पर लड़कियों पर हमेशा सवाल उठाते रहते हैं, और अपने लिए कोई फैसला लेने का भी हक नहीं देते। कहानी टाइम ट्रेवल पर बेस्ड है इसलिए, टाइम ट्रेवल के कॉन्सेप्ट को भी समझाने की कोशिश की गई है। आशा करती हूं कि आप लोगों को यह कहानी पसंद आएगी।

अगस्त 2030 दिल्ली,

कभी-कभी हमें लगता है की प्रकृति ने हमारे साथ अन्याय किया है, यह वैसा फ्यूचर नहीं है जैसा हमने सोचा था। काश कि हमने उस समय ये किया होता काश हमने वो किया होता, तो हमारे जीवन की कहानी कुछ और होती। पर यह सब सोचते सोचते हम यह भूल जाते हैं की प्रकृति इस दुनिया की सबसे अच्छी कहानीकार है, और अगर वह कोशिश करने पर भी आपको कुछ नहीं दे रही तो हमें यह स्वीकार कर लेना चाहिए और अपने वर्तमान को सुधारने पर ध्यान देना चाहिए।

आशी, आशी कहां हो तुम? तुम अब तक तैयार नहीं हुई। तुम्हें याद है ना, तुम्हें आज शॉपिंग करनी थी। हां हां याद है, तुम 2 मिनट रुको मैं चेंज करके आती हूं। निशा की बात सुनकर आशी ने अपनी डायरी बंद करते हुए कहा।

ओके, वैसे तुम लिख क्या रही थी? निशा ने पूछा। आशी ने जवाब दिया कुछ नहीं बस ऐसे हीं।

शॉपिंग मॉल में,

निशा यह कैसा है? आशी ने निशा को एक ड्रेस दिखाते हुए पूछा। ठीक है, और ये ? क्या यार, तुम्हें गहरे रंगों से कोई दुश्मनी है क्या? या तुम आज भी ब्लैक एंड व्हाइट दुनिया में जी रही हो। निशा आशी से थोड़ी खींजती हुई बोली।

ठीक है, तो तुम हीं मेरे लिए चूज कर दो। आशी ने निशा से कहा।

वह ऑरेंज वाला? निशा.. सॉरी यार मजाक कर रही थी कुछ ज्यादा ब्राइट हो जाएगा। वह डार्कग्रीन, नहीं मुझे इसका डिजाइन पसंद नहीं आ रहा। ठीक है, इसके बारे में क्या ख्याल है? आशी ने फिर ना में सिर हिलाया। अच्छा यह वाला कैसा है? निशा ने एक ब्लू कलर की ड्रेस आशी को दिखाते हुए पूछा। आशी ने उस ड्रेस को कुछ सेकेंड तक देखा और फिर कहा- ये चलेगा, अब चलो बारिश होने वाली है जल्दी घर चलते हैं।

घर पहुंच कर आशी ने अलमीरा खोला और अपनी नई ड्रेस को उसमें रखने लगी। उसके अलमीरा में ज्यादातर ड्रेस ब्लैक एंड व्हाइट के शेड्स में हीं थें, सिर्फ एक साड़ी जो काफी पुरानी थी ब्लू कलर में थी। जिसे देख वह अपने पुराने दिनों को याद करने लगती है।

22 फरवरी 2016

हैप्पी बर्थडे आशी। देव ने मुस्कुराते हुए चेहरे के साथ उसे विश करते हुए एक गिफ्ट थमाया। वह सुबह के 8:00 बजे हीं गिफ्ट लेकर उसके घर आ गया था।

आशी जो कुछ दिनों से अपने स्कूल फेयरवेल को लेकर इतनी एक्साइटेड थी, कि अपना बर्थडे भी भूल गई थी। उसने गिफ्ट पकड़ते हुए कहा- आज मेरा बर्थडे भी है, मुझे तो याद ही नहीं था, थैंक यू पर इसमें है क्या? पास में खड़ी उसकी मां बोल पड़ी- खोल कर देख लो। आशी ने जब उसे खोला तो वो और उसकी मां दोनों आश्चर्य में पड़ गए थे। उसमें एक ब्लू कलर की सुंदर सी साड़ी थी। आशी की मां ने देव से पूछा- तुमने इसे साड़ी गिफ्ट की है?

देव ने कहा - यह मम्मी की तरफ से है। कल जब मां अपने लिए साड़ी खरीद रही थी, तब मैंने बातों-बातों में उन्हें बताया कि, आशी भी स्कूल फेयरवेल में साड़ी पहन कर जाना चाहती है क्योंकि उसके सारे फ्रेंड्स और स्कूल की ज्यादातर लड़कियां साड़ी हीं पहनेंगी। ऊपर से फेयरवेल वाले दिन ही उसका बर्थडे भी है, और मैंने अभी तक उसके लिए कोई गिफ्ट भी नहीं खरीदा है। तो मम्मी ने एक और साड़ी खरीद ली और इसे देने के लिए कहा। क्या आप लोगों को पसंद नहीं आई?

आशी की मां ने कहा- यह बहुत सुंदर है। इतने में आशी ने पूछा- मां क्या मैं इसे पहन कर जा सकती हूं? आशी की मां ने हांमी भरते हुए कहा- चलो, आज मैं तुम्हें तैयार करती हूं। और फिर देव से कहा- अब तुम भी जाओ और फेयरवेल में जाने के लिए तैयार हो जाओ और हां,अपनी मां को भी साथ लेते आना। देव ओके आंटी कहता हुआ अपने घर की ओर निकल गया।

उन दोनों के घरों के बीच मात्र दो गलियों का फासला था। एक घंटे बाद, देव जब अपनी मां के साथ पहुंचा तो आशी की मां ने उनसे कहा- तो लगता है तुमने हमारी सालों की दोस्ती को रिश्तेदारी में बदलने का फैसला कर हीं लिया। तो बताओ कैसी लग रही है ये?

देव की मां बोल पड़ी- बहुत सुंदर, कहीं इसे मेरी हीं नजर ना लग जाए। इतने में आशी ने कहा- नहीं लगेगी क्योंकि मैंने काजल जो लगाया है। यह सुनकर दोनों मम्मीयां हंस पड़ी। इस पर देव ने कहा- चेहरा ढक लो कहीं स्कूल जाते-जाते धूल और धूप से तुम्हारा मेकअप न उतर जाए। आशी देव को घूरने लगी तो देव थोड़ा डरने का नाटक करते हुए धीरे से बोला- अरे मैं तो तुम्हारी भलाई के लिए ही बोल रहा हूं ना। इतने में देव

की मां ने कहा- देव अब बस करो, तुम लोगों को लेट नहीं हो रही है क्या? चलो जाओ।

10 सितंबर 2030 बेंगलुरु

दरवाजे की डोर बेल सुन साक्षी दरवाजा खोलती है। देव अंदर आते हुए पूछता है- देवांशी सो गई क्या? हां अभी थोड़ी देर पहले हीं सोई है। तुम कपड़े बदल लो, मैं खाना लगाती हूं। देव हां कहते हुए, अपने कमरे में जाने लगा। टीवी पर एक बहुत ही पॉपुलर शो का फाइनल चल रहा था।

टीवी में -

और सोशल मीडिया डांसिंग स्टार की विनर हैं न्यू दिल्ली से आई हुई हमारी बैलरीना आशी सिंह।

आशी सिंह, यह नाम सुनते हीं देव अचानक मुड़ा और टीवी देखने बैठ गया। साक्षी ने पूछा- क्या हुआ? क्या आज तुम्हारा टीवी देखने का मन है, ठीक है तो मैं यहीं खाना ला देती हूं। हां ठीक है, देव ने जवाब दिया। साक्षी भी देव को खाना देकर उसके पास हीं सोफे पर बैठ गई। देव का पूरा ध्यान टीवी पर हीं था। उसके चेहरे पर उदासी और खुशी एक साथ झलक रही थी। साक्षी ने देव से पूछा- क्या यह वही आशी है? देव ने हम्म कहते हुए, हां में सर हिलाया।

साक्षी ने कहा- काश कि तुम मेरी शादी पर नहीं आते, तो शायद आज वो तुम्हारी वाइफ होती। तुम्हें मुझसे शादी नहीं करनी चाहिए थी। देव ने साक्षी की और देखा और कहा- तो फिर तुम्हारा क्या होता? कुछ नहीं,

कुछ सालों में सब ठीक हो जाता। पर तुम हीं थे जो मेरे मां बाप के इमोशनल बातों में आ गए थे।

पर ऐसा नहीं कि मुझे तुमसे शादी करने का कोई पछतावा है। और हम दोनों की बातचीत तो काफी पहले ही खत्म हो गई थी। देव ने कहा।

साक्षी ने धीमे स्वर में कहा- पर तुम खुश नहीं हो, मैं बस तुम्हारी जिम्मेदारी बन गई हूं जीवन की खुशी नहीं।

फिर साक्षी ने देव के हाथ पर अपना हाथ रखते हुए कहा- इसलिए कभी अगर तुम्हें मौका मिले, अपनी खुशी को पाने का तो मेरे बारे में मत सोचना। देव ने थोड़े आश्चर्यमें पूछा- तुम आज ये सब क्यों कह रही हो? साक्षी ने कहा- तुमने इसरो की स्पेस कम्युनिटी को छोड़कर टाइम मशीन पर रिसर्च करने वाले साइंटिस्ट का असिस्टेंट बनना क्यों चुना था? क्या यह उसी की वजह से नहीं था? देव चुप था। साक्षी ने फिर कहा- वह समय आ गया है,जब तुम पास्ट में जाकर अपना वर्तमान बदल सकते हो, है ना?

तुम्हें कैसे पता चला? देव ने पूछा।

साक्षी ने जवाब दिया- आज दरवाजा खोलने पर जब मैंने तुम्हारे चेहरे पर खुशी देखी तब। साक्षी पर.. देव ने कुछ कहना चाहा, पर साक्षी ने देव की बात को काटते हुए कहा- इतने सालों में, मैं पहले से ज्यादा कॉन्फिडेंट हो गई हूं तो मैं खुद को संभाल लूंगी, मुझे पता है कि, मुझे अभी का कुछ भी याद नहीं रहेगा पर एक्सपीरियंस का कुछ तो असर जरूर रहेगा। क्योंकि यह जीवन मैंने हकीकत में जिया है, राइट?

राइट, देव ने कहा।

रिसर्च सेंटर में

(फर्स्टअटेम्प्ट)

11 सितंबर 2030

हम जा रहे हैं 13 अप्रैल 2022 में,

जगह- दिल्ली रेलवे स्टेशन ,समय- सुबह के 6:00 बजे।

10 सितंबर 2030 बेंगलुरु

दरवाजे की डोर बेल बजते हीं 4 साल की नन्ही सी देवांशी उछल-उछलकर शोर करने लगी- पापा आ गए, पापा आ गए।

हां हां अब मुझे दरवाजा तो खोलने दो, चलो थोड़ा पीछे हटो।

आशी ने, नन्ही देवांशी को दरवाजे से थोड़ा दूर करते हुए कहा।

पापा, आज आप जल्दी आ गए? देवांशी ने अपने पापा को अंदर आते हीं गले लगाते हुए पूछा। हां, क्योंकि मुझे आपको एक गुड न्यूज़ देनी थी। देव ने देवांशी को गोद में उठाते हुए कहा। गुड न्यूज़, वह क्या? देवांशी ने पूछा।

आपके पापा और साइंटिस्ट अंकल ने मिलकर टाइम मशीन को और बेहतर बना लिया है। और अब कोई भी, अपने पास्ट में जाकर काफी सालों तक रह सकता है। मतलब? देवांशी ने भोलेपन से पूछा।

देव, तुम्हें लगता है कि तुम्हारी ये छोटी सी परी साइंस की ये सारी बातें अभी से समझ पाएगी? आशी ने खाना लगाते हुए कहा।

देव ने कहा- बस कुछ साल और, फिर तो ये मेरे साथ रिसर्च भी करेगी। आशी ने थोड़े मजाकिया अंदाज में कहा- हां हां क्यों नहीं, और फिर अपना पति भी फ्यूचर से लेकर आएगी।

पर अभी, हम एक साथ बैठकर खाना खाते हुए टीवी देखने का मजा लेते हैं, ओके? ओके मॉम। देव और देवांशी ने एक साथ हंसते हुए कहा।

आज इस डांस शो का फाइनल है। तो मिस्टर साइंटिस्ट, क्या आप भविष्य में जाकर यह बता सकते हैं कि कौन विनर होगा? आशी ने शरारती अंदाज में देव से पूछा।

नहीं, क्योंकि हम सिर्फ पास्ट में जा सकते हैं, जो पहले हो चुका है। जो हुआ ही नहीं वहां कैसे जाएंगे? देव ने समझाते हुए कहा। पॉइंट तो है, आशी ने देव की हां में हां मिलाते हुए कहा।

टीवी पर-

सोशल मीडिया डांसिंग स्टार के फाइनल में आपका फिर से स्वागत है। और अब ज्यादा देर ना करते हुए, हम अनाउंस करने जा रहे हैं इस सीजन के विनर का नाम।

जज- सोशल मीडिया डांसिंग स्टार की विनर हैं, मुंबई की आयशा राठी।

मुझे लग ही रहा था कि यही विनर होगी, पर मुझे और खुशी होती अगर कोई बैले डांसर इस शो को जीतती। काश कि मैं वहां होती, अगर मैंने अपना डांसिंग वीडियो सोशल मीडिया पर डालना छोड़ा नहीं होता तो शायद, आज मेरे भी लाखों में फॉलोअर्स होते। और मुझे भी वहां इनवाइट किया जाता।

आशी की बातें सुनकर देव ने कहा- अच्छा मान लो, कि आज उस लड़की की जगह पर तुम हीं विनर होती, तुम्हारे लाखों में फॉलोअर्स भी होते, तो क्या तुम अभी हमारे साथ जितनी खुश हो, इससे ज्यादा खुश होती? आशी ने कहा- बिल्कुल, मैं बहुत खुश होती। आशी की बात सुनकर देव को वो समय याद आने लगा, जब आशी ने यह टाइटल जिता था, और वह सोशल मीडिया का एक जाना पहचाना चेहरा थी। पर इस जीवन में अभी वह सिर्फ, उसकी वाइफ थी।

देव को कुछ सोचता देख आशी को लगा कि शायद, उसने इस बात को थोड़े गलत ढंग से कह दिया है, और देव को बुरा लग रहा है। इसलिए आशी ने, देव के हाथ को अपने हाथ में लेते हुए कहा- मेरा मतलब है कि मैं तुम्हारे साथ, हमारी देवांशी के साथ खुश हूं। पर अगर मैं विनर भी होती, तो मुझे और खुशी होती। और तुम भी शान से कह पाते कि ये डांसिंग स्टार आशी सिंह, मेरी वाइफ है।

देव ने चेहरे पर थोड़ा मुस्कान लाते हुए कहा- तुम मेरे लिए अभी भी खास हो। पर मुझे भी सच में कभी-कभी लगता है कि, मेरी वजह से तुम्हारा करियर खराब हो गया। मैंने अपनी जिद के कारण तुमसे 23 साल की उम्र में ही शादी कर ली। और तुम्हारे सपनों पर पानी फेर दिया। शादी के बाद प्रेगनेंसी के वजह से तुमने डांस छोड़ दिया, सोशल मीडिया से दूर रहने लगी और फिर, हमने हमारा अजन्मा बच्चा भी खो दिया। अगर, मैं तुम्हारी जिंदगी में नहीं होता तो ये सभी चीजें भी नहीं होती। ये सब कहते हुए देव की आंखें नम हो गई थीं।

आशी अपनी चेयर से उठकर देव के पास गई, और उसके चेहरे को अपने हाथों से पकड़ते हुए कहा- बुरे समय में तुमने मुझे जितना सपोर्ट किया है,

जितना तुमने मेरी केयर की, क्या तुम्हें लगता है कि कोई और पति करता? मुझे दुनिया का सबसे अच्छा पति मिला है, और फिर हमें यह परी जैसी बेटी भी तो मिली है। आशी ने देवांशी की ओर देखते हुए कहा।

तभी देवांशी बोल पड़ी- मम्मा, अभी गुड नाइट का समय नहीं हुआ है। आप पापा को अभी गले क्यों लगा रही हो? अभी तो खाना खाने का समय है। देखो, आप लोगों ने खाना फिनिश भी नहीं किया। देवांशी की ये प्यारी बातें सुनकर दोनों के चेहरे पर मुस्कान आ गई। आशी ने वापस अपने चेयर पर बैठते हुए कहा- यस इट्स डिनर टाइम, सो नॉ थिंकिंग, नॉ टॉकिंग जस्ट ईटिंग।

सोने का समय हो गया था। पर देव अभी भी मन हीं मन यह सोच रहा था कि, शायद उसने सिर्फ अपनी खुशी के लिये सब कुछ बिगाड़ दिया है। देव को याद आता है, कि जब भी उन दोनों ने साथ में कोई ऐसी मूवी या सीरियल देखी है, जहां लड़की ने अपने करियर के वजह से लड़के को छोड़ दिया। या पहले करियर बनाना चुना, तो आशी ने हमेशा उस फीमेल लीड को सही कहा था। उसका शुरू से मानना रहा था कि किसी के लिए भी, अपना कैरियर फर्स्ट प्रायोरिटी होनी चाहिए। जहां तक रही लव की बात, तो जो आपको प्यार करते हैं, वह हमेशा ही करते रहेंगे। और अगर प्यार सच्चा है, तो वह आपके लिए इंतजार जरूर करेंगे।

यह सब सोचते हुए, देव ने फिर से पास्ट में जाकर अपने पहले वाले स्वरूप को कुछ भी बदलने से रोकने का फैसला किया।

सेकंड अटेम्प्ट
(11 सितंबर 2030)

हम जा रहे हैं-

13 अप्रैल 2022 में, समय- सुबह के 6:00 बजे,

दिल्ली रेलवे स्टेशन।

देव मन में- मुझे खुद को रोकना होगा, उससे मिलने से, फिर सब पहले जैसा हो जाएगा।

डॉक्टर खन्ना (साइंटिस्ट) - वापस आने का समय क्या रखना है? देव- एक घंटे बाद का।

ठीक है घड़ी में टाइमर लगा लो।

उसी समय घर पर -

आशी को याद आया की देव ने जाते हुए उससे कहा था, आज उसने बिस्तर ठीक नहीं किया है।

करता भी कैसे? देर से उठने के कारण आज रिसर्च सेंटर जाने के लिए भी उसे देर हो रही थी। पता नहीं, आज कुछ उदास भी लग रहा था।

यह सब सोचते हुए आशी बेडरूम में जैसे ही पहुंची उसने देखा, बिस्तर बना हुआ था। पर बेड पर, देव की स्टडी टेबल वाला एक पेपर वेट, एक कागज पर रखा हुआ था।

तो जनाब ने इस खत के लिए यह बहाना बनाया था। आशी ने वह कागज उठाते हुए कहा।

देव को जब भी कोई ऐसी बात, आशी को बतानी होती जो वह उसे सामने से नहीं कह पा रहा हो, या कोई सरप्राइज देना हो, तो वह उसके लिए खत लिखकर रख दिया करता था।

आशी ने वह खत उठाया, उसमें लिखा था- आशी, जब हम आज से 8 साल पहले दिल्ली स्टेशन पर मिले थें, तो तुमने पूछा था ना, कि मैं उतनी सुबह-सुबह वहां क्या कर रहा था। जबकि तुमने तो देहरादून स्टेशन पर मुझसे मिलने का वादा लिया था। मैंने कहा था कि, मुझे लगा था कि तुम भूल गई होगी। तो इसलिए मैं ही दिल्ली आ गया। पर सच बताऊं तो, मैंने एक बार तुम्हारा इंतजार किया था, देहरादून रेलवे स्टेशन पर। और तुम सच में नहीं आई थी। तुम सच में भूल गई थी।

पर मैं खुश नहीं था। इसलिए जब कई साल गुजर जाने के बाद भी मैं तुम्हें नहीं भूल पाया, तब मैंने टाइम ट्रेवल किया। और 8 साल पीछे जाकर दिल्ली में तुमसे मिला, और हमारे वर्तमान को चेंज कर दिया। यह समय जो हमने साथ गुजारा वह मेरे द्वारा बनाया हुआ वर्तमान था। और अब, मैं इसे बदलने जा रहा हूं। फिर से हमारी कहानी वही होगी जो कुदरत ने लिखी थी। हम एक साथ नहीं रहेंगे पर, एक दूसरे के दिलों में हमेशा होंगे। तुम एक सक्सेसफुल वूमेन रहोगी, और मैं किसी और का पति। पर शायद वही सही रहेगा, तुम फिर से खुश होगी और तुम्हारी जिंदगी में कोई पछतावा नहीं होगा। पहले मैं तुम्हें शायद, सिर्फ पसंद करता था इसलिए तुम्हें पाना चाहता था अपनी खुशी के लिए, पर आज सच में तुम्हें प्यार करता हूं, इसलिए तुम्हें खुश और सक्सेसफुल देखना चाहता हूं। मुझे माफ करना तुम्हारी जिंदगी बदलने के लिए, और शुक्रिया मुझे इतनी खूबसूरत यादें देने के लिए। तुम्हारा देव।

आशी की आंखों में आंसू आ गए थें। वो सिसकते हुए कह रही थी- मुझे तुम्हें बता देना चाहिए था, कि सिर्फ तुम हीं नहीं हो जो मुझे पाना चाहते थे, मैंने भी तुमसे मिलने के लिए यह पागलपन किया था।

8 अप्रैल 2022

निशा- अरे यार तुझे साइंस हीं क्यों लेना था, आर्ट्स भी तो ले सकती थी। तेरे चक्कर में, मैं भी फंस गई। मुझे तो यह फिजिक्स सर दर्द लगता है मेरा बस चलता ना तो सच में, मैं न्यूटन, आइंस्टीन, निकोला सबको इन थिअरीज की खोज करने से पहले हीं मार देती। ना यह खोज होती ना हमें यह सब पढ़ना पड़ता।

आशी- और ना हीं हम इतने डेवलप होते, ना तेरे हाथों में यह मोबाइल होता और ना हीं आराम की जिंदगी। वैसे अगर तू इन लोगों को मार भी देती, तो भी यह सब तुम्हें पढ़ना ही पड़ता। निशा- वह कैसे?

आशी- क्योंकि इन सभी थिअरीज की खोज न्यूटन और आइंस्टीन के जन्म से भी कई साल पहले, भास्कराचार्य और आर्यभट्ट जैसे लोगों ने कर लिया था। यहां तक की थ्योरी ऑफ रिलेटिविटी सिद्धांत के बारे में भी सत्येंद्र नाथ बोस ने हीं पहले लिखा था।

निशा- अच्छा तुझे कैसे पता? आशी- क्योंकि माय डियर फ्रेंड मैं किताबें पढ़ती हूं, तेरी तरह सिर्फ देखती नहीं हूं। और मुझे हिस्ट्री में भी दिलचस्पी है, इसलिए पता है।

निशा- वही तो तुझे डांस या हिस्ट्री ही चुनना था। फिर मेरे लिए भी शायद थोड़ी आसानी होती। पता नहीं वह टॉपर धृति कैसे हर बार टॉप करती है।

आशी- क्योंकि उसके पिता एक साइंटिस्ट हैं, तो शायद बचपन से हीं उसे साइंस में इंटरेस्ट आ गया होगा। वैसे, मुझे याद आया मुझे उससे कुछ नोट्स लेने थे।

क्लास में-

आशी- धृति, मुझे तेरे नोट्स की थोड़ी जरूरत है। अरे हां आशी, तुम दो दिनों से कहां थी। मुझे तुझसे कुछ इंपॉर्टेंट बात करनी थी, क्लास के बाद कैंटीन में मिलना। धृति ने आशी को नोट्स देते हुए कहा। आशी ने नोट्स लिया और उसके पीछे की सीट पर निशा के साथ बैठ गई।

निशा- मुझे तो लगता है, कि वही तेरी बेस्ट फ्रेंड है। तुम दोनों की इतनी बनती क्यों है?

ऐसे जल मत, तेरी जगह कोई नहीं ले सकता। आशी ने निशा के गाल पिंच करते हुए कहा।

क्लास के बाद कैंटीन में-

आशी- बोलो, तुम्हें क्या बात करनी थी। धृति- तुम्हें स्पेस साइंस में दिलचस्पी है ना, क्या तुम इस तरह के रिसर्च का हिस्सा बनना चाहोगी? आशी ने थोड़ा कंफ्यूज होते हुए पूछा- मतलब? धृति ने उसे बताया कि- उसके पिता टाइम ट्रेवल मशीन बना रहे हैं, जो कि लगभग तैयार हो चुका है। पर अब उन्हें एक इंसान चाहिए, जो प्रूफ कर सके कि उनकी यह मशीन सच में काम करती है। अगर वह सक्सेसफुल हो गए, तो उन्हें नासा वालों के साथ काम करने का मौका मिलेगा। हालांकि, मेरे पिताजी को इसरो के तरफ से जॉइनिंग लेटर पहले हीं आ चुका है। तो वह शायद वहीं ज्वाइन करेंगे।

आशी- तो क्या तुम ये चाहती हो कि मैं उनकी एक्सपेरिमेंटल सब्जेक्ट बनूं? धृति- अगर तुम नहीं चाहती हो तो कोई बात नहीं, तुम्हें इंटरेस्ट था इसलिए मैंने बस तुम्हें बता दिया। आशी- अच्छा एक बात पूछूं। पूछो धृति ने कहा।

आशी- तुम्हें भी तो इंटरेस्ट है, फिर तुम.. धृति ने आशी की बात काटते हुए कहा- इंटरेस्ट तो है, पर उनकी बेटी की बातों पर ज्यादा लोग भरोसा नहीं करेंगे। वैसे वो मशीन सुरक्षित है, इतना तो प्रूफ हो चुका है। क्योंकि, मेरे पिताजी का पहला सब्जेक्ट हमारा डॉग था।

इतना सब सुनकर आशी ने सिर्फ हम्म में जवाब दिया, तो धृति ने उसे अच्छे से सोच कर निर्णय लेने के लिए कहा।

घर आने के बाद भी आशी मन में सोच रही थी। सभी को पता था कि उसे स्पेस साइंस में दिलचस्पी है। पर किसी को यह नहीं पता था, कि उसका लक्ष्य इसरो रिसर्च सेंटर था । इसलिए नहीं कि उसे कोई एस्ट्रोनॉट या साइंटिस्ट बनना था, बल्कि इसलिए क्योंकि उसे देव के करीब रहना था।

2016 में उनके दसवीं के फेयरवेल के कुछ दिन बाद हीं, देव अपनी फैमिली के साथ देहरादून चला गया था। उसने बचपन से ही इसरो में जाने का सपना देखा था। इसलिए उसके पिताजी ने उसका एडमिशन देहरादून में स्थित बेस्ट साइंस कॉलेज में करवा दिया था।

देव ने जाते हुए, आशी को भी साइंस लेने के लिए कहा था। ताकि वे दो साल बाद, एक साथ केरल में स्थित आई० आई० एस० टी० यूनिवर्सिटी में पढ़ाई कर सके। इसलिए आशी ने डांस छोड़कर सिर्फ पढ़ाई पर ध्यान

लगाना शुरू कर दिया था। पर फिर भी केरल के उस कॉलेज में एडमिशन के लिए उसके मार्क्स थोड़े कम थें।

पहले दोनों में अक्सर बातें होती थी पर, देव के केरल जाने के बाद से उनके बीच बातें कम होने लगी थी। एक बार जब देव कुछ हफ्तों के लिए अपने घर आने वाला था, तब उसकी मम्मी ने आशी और उसकी मम्मी को देहरादून आकर, देव को सरप्राइज देने के लिए भी बुलाया था। पर कोरोना के कारण सब चौपट हो गया था।

और इन छुट्टियों में बैठे-बैठे उसे ओवर थिंकिंग की भी बीमारी हो रही थी। क्या उसने सही डिसीजन लिया है, साइंस लेकर। क्या उनकी दोस्ती अभी भी पहले जैसी हीं रह पाएगी? वगैरा-वगैरा। एक बार तो उसे एक फिल्म देखते हुए, इस बात पर भी रिग्रेट हो रहा था कि उन दोनों ने भी बिछड़ते हुए, अपने मिलने का कोई समय निर्धारित क्यों नहीं किया।

जिससे उन्हें यह पता चल पाता कि वह एक दूसरे के लाइफ में अभी भी इंपोर्टेंट है या नहीं।

कोरोना के छुट्टियों में खुद को बिजी रखने के लिए आशी ने फिर से डांस का दामन थामा, उसे बचपन से ही बैले डांस बहुत पसंद था। इसलिए उसने कुछ सालों की ट्रेनिंग भी ली थी। पर इंटर में अच्छे मार्क्स पाने के लिए और केरल यूनिवर्सिटी के टेस्ट को पास करने के लिए उसने सब कुछ छोड़ दिया था।

और आज फिर ओवर थिंकिंग करते-करते उसने सोचा, क्यों ना सच में पास्ट में जाकर एक डेट निर्धारित कर ली जाए। उसके लिए तो यह बस कुछ ही दिनों की बात होगी पर, देव के लिए पूरे छह साल। अगर उसे यह

दिन याद रहा और वह मुझसे मिलने आया, इसका मतलब मैं अभी भी उसके लिए इंपॉर्टेंट हूं। और नहीं, तो फिर मैं भी उसके बारे में सोचना छोड़ दूंगी। यह ख्याल मन में आते हीं, उसने धृति को कॉल किया और टाइम ट्रेवल का सब्जेक्ट बनने के लिए हां कर दिया।

10 अप्रैल 2022 दिन रविवार

धृति के घर पर -

डॉक्टर खन्ना (धृति के पिता)- यह वॉच पहन लो, इसमें मैंने एक घंटे बाद का समय डाला है, तुम्हारे इस समय में वापस आने के लिए। क्या तुम जाने के लिए तैयार हो?

आशी हां बोलते हुए अपना सर हिलाती हैं, और डॉक्टर खन्ना अपना टाइम मशीन स्टार्ट करते हैं।

1 मार्च 2016 दिल्ली

शाम 4:00 बजे आशी के घर पर -

क्या देव सच में कल चला जाएगा? 16 साल की आशी अपनी मां से पूछ रही थी। हां बेटा, अब वो देहरादून में हीं पढ़ेगा। उनका देहरादून में अपना घर है, वो तो देव के पिताजी का ट्रांसफर यहां हो गया था, इसलिए वो लोग कुछ साल यहां पर थें। पर देव ने तो मुझे इस बारे में कुछ भी नहीं बताया। आशी ने थोड़े गुस्से में कहा।

शायद उसे भी पहले से पता ना हो। उसकी मां ने जवाब दिया। चलो, मैं तो देव के घर जा रही हूं। तुम्हें चलना है? आशी की मां ने उससे जाते हुए पूछा।

मुझे नहीं जाना, तुम हमेशा उसकी साइड लेती रहती हो। आशी ने गुस्से में कहा। ठीक है, मैं तो जा रही हूं। क्योंकि पता नहीं कल मिल भी पाऊंगी या नहीं, शायद सुबह की हीं ट्रेन है। कहते हुए उसकी मां घर से निकलने लगी। उन्हें लगा, कि शायद यह सुनकर तो वो उनके साथ जरूर आएगी। पर ऐसा नहीं हुआ।

घर के बाहर खड़ी 22 साल की आशी, यह सब छुप कर देख रही थी। उसे पता था, कि कुछ हीं देर में देव यहां जरूर आएगा। इसलिए वह भी, वहीं पर उसका इंतजार करने लगी। जैसा कि पहले भी हो चुका था, आशी की मां को अकेला अपने घर में आया देखकर, देव समझ गया की आशी गुस्से में होगी। इसलिए वह उसे समझाने उसके घर आ गया।

उसे आता देख 16 साल वाली आशी ने, गुस्से में कहा- तुम्हें लेट हो जाएगा, जाकर अपना सामान पैक करो।

अरे पर मुझे अभी थोड़े जाना है, कल सुबह की ट्रेन है। देव ने जवाब दिया।

ओ..आई एम सॉरी, तुम अभी आए तो मुझे लगा जाते वक्त टाटा बाय-बाय बोलकर अपनी दोस्ती का फर्ज निभाने आए होगे। आशी ने थोड़ा ताना देने वाले अंदाज में कहा।

मुझे खुद मम्मी ने कल हीं बताया। और मैं तभी से सोच रहा था, तुम्हें बताने के बारे में पर..

आशी ने देव की बात को बीच में काटते हुए कहा- पर तुम्हें टाइम नहीं मिल रहा होगा मुझे फोन करने का या मेरे घर आने का, राइट?

नहीं, हम साथ में कैसे पढ़ाई कर पाएंगे इस बारे में पता कर रहा था। देव ने आशी को अपनी और घूमाते हुए कहा।

अच्छा, जरा बताना वह कैसे होगा? आशी के पूछने पर देव ने बताया- इंटर के बाद, मैं केरल के IIST यूनिवर्सिटी जाऊंगा अपने सपनों को पूरा करने के लिए, तो तुम भी वहीं का फॉर्म भरना। फिर हमारा जिंदगी भर दोस्त रहने का वादा नहीं टूटेगा। क्योंकि मुझे पता है कि 2 साल बाद भी अगर हम नहीं मिले, तो मैं तो नहीं, पर तुम मुझे जरूर भूल जाओगी। देव ने आशी के फोरहेड पर हल्का मारते हुए कहा।

बिल्कुल, वैसे भी वहां एडमिशन के लिए एग्जाम पास करना होता है। मैं इतनी मेहनत क्यों करूंगी? मुझे डांस पसंद है, तो मैं तो आर्ट्स लूंगी ताकि ज्यादा मेहनत ना करना पड़े और अपने डांस के लिए भी समय निकाल पाऊं। आशी ने देव को चिढ़ाते हुए कहा।

मतलब तुमने मुझे पहले से ही लेट गो कर दिया है। देव ने कहा।

जब मुझे पता है कि चाहे कितनी भी कोशिश कर ली जाए, दूर रहने पर दोस्तों में दूरियां आ हीं जाती है, तो फिर... इतना कहकर आशी चुप हो गई। थोड़ी देर के लिए कमरे में खामोशी छा गई।

थोड़ी देर बाद देव ने जाते हुए कहा- ठीक है, तो अब मुझे जाना चाहिए। लगता है अभी से हीं तुम्हारे पास मुझसे बात करने के लिए भी, कोई बात नहीं रही। देव की उदासी भरी बातें सुनकर आशी ने कहा- हम फोन पर अक्सर बातें किया करेंगे और कोशिश करेंगे कि हमारी दोस्ती ना टूटे।

देव जो की जाने लगा था, रुक गया। और आशी की ओर मुड़ते हुए कहा- और हम मिल भी तो सकते हैं। देहरादून ज्यादा दूर तो नहीं है। फिर बच्चों की तरह एक्साइटेड होते हुए कहा- अरे हां, मेरे केरल जाने के बाद अगर हमें मिलना होगा तो एक डेट डिसाइड कर लेंगे। ओके?

उस समय क्यों, अभी हीं कर लेते हैं। आशी ने थोड़ा मजाक उड़ाने वाले लहजे में कहा। यह आइडिया भी बूरा नहीं है। बिल्कुल फिल्मी लगेगा, है ना? देव ने आंख मारते हुए कहा।

हां क्यों नहीं, और अगर हम दोनों में से उस दिन कोई नहीं आया, तो हमेशा के लिए अलविदा। क्यों ठीक है ना? आशी ने देव की तरफ देखकर, भौंहें उचकाते हुए कहा।

ठीक है, देखेंगे वो तारीख किसे याद नहीं रहती है, मुझे या तुम्हें। ऐसा कहते हुए देव जाने लगा, तभी उसके सामने एक मुड़ा हुआ कागज गिरा। जो भविष्य वाली आशी ने फेंका था।

देव ने कागज़ उठाया और खोल कर देखा। उस पर एक डेट और जगह लिखा था। '13 अप्रैल 2022 देहरादून रेलवे स्टेशन'। देव को लगा शायद आशी ने उसे यह दिया है इसलिए जाते हुए उसने फिर से कहा- ठीक है मैं तो जरूर आऊंगा, क्योंकि मेरी याददाश्त बहुत अच्छी है।

भविष्य वाली आशी ने देखा 1 घंटे पूरे होने में कुछ हीं सेकंड बाकी थें इसलिए उसने घर से बाहर निकल कर, अपने हाथों में पहने हुए घड़ी रूपी गैजेट का ओके बटन प्रेस किया। जिससे वह वापस 2022 में जा सके।

यह सब याद करते हुए आशी को वह दिन भी याद आया, जब वह देव से स्टेशन पर मिली। उस समय देव की उम्र थोड़ी ज्यादा लग रही थी

जबकि, कुछ दिनों बाद जब वह उसके घर आया था, तो अपनी आयु के अनुसार हीं दिख रहा था।

13 अप्रैल 2022

दिल्ली रेलवे स्टेशन सुबह के 6:00 बजे

देव वापस 2022 में आ चुका था। उसे याद था कि उसका पहला स्वरूप (फर्स्ट अटेम्प्ट वाला देव) अभी मेन एंट्रेंस के पास, आशी का इंतजार कर रहा होगा।

उसके पास सिर्फ 1 घंटे थें, खुद को रोकने के लिए। इसलिए उसने बिना वक्त गंवाए एक मास्क खरीदा और अपने पहले स्वरूप के पास जाकर धीरे से बोला- वापस चलो, तुम्हें आशी से नहीं मिलना चाहिए।

पहले वाले देव ने, थोड़ा घबराते हुए उसकी ओर देखा। अभी वाले देव (2030 वाला) ने अपना मास्क थोड़ा हटाया। जिसे देखकर पहले वाला देव थोड़ा हिचकिचाते हुए बोला- तुम, क्या मैंने दोबारा टाइम....

अभी वाला देव, उसकी बात के पूरा होने से पहले हीं कहने लगा- हां, अगर तुम अभी आशी से मिले, तो तुम्हें दोबारा समय में पीछे आना होगा। मैं वह जीवन जी की कर आया हूं, जिसे सोचकर तुमने पहली बार टाइम ट्रेवल किया था।

पर क्यों? क्या आशी मुझसे शादी नहीं करना चाहती थी? या आगे चलकर कोई प्रॉब्लम हो गई। कुछ बुरा हुआ है क्या? पहले वाले देव ने पूछा।

नहीं, पर वह दिल से खुश नहीं रह पाएगी। तुमने देखा था ना, कि वह अपनी लाइफ में सक्सेसफुल थी। पर अभी मिलने के बाद, जब तुम उससे कुछ महीनों बाद शादी कर लोगे, तो सब कुछ बदल जाएगा। उसका डांसर बनने का, अपनी पहचान बनाने का सपना पूरा नहीं हो पाएगा और उसे अपना कैरियर छोड़ने का रिग्रेट हमेशा रहेगा। फिर तुम्हें एहसास होगा, कि तुम्हारा यह डिसीजन गलत था। अभी वाले देव ने उसे समझाते हुए कहा।

और साक्षी का क्या हुआ? पहले वाले देव ने पूछा।

साक्षी भी अकेली, थोड़ी मुश्किल भरी जिंदगी जी रही है। रिश्ता तोड़ने के वजह से उसके घर वाले खुश नहीं थे, जिसे देखकर उसने घर छोड़ दिया और अब दिल्ली में ही जॉब कर रही है। अभी वाले देव ने जवाब दिया।

पहले वाले देव ने आश्चर्य से पूछा- दिल्ली में?

हां, आशी से शादी करने के बाद, हम उसकी शादी पर वहां गए थें। जहां आशी को साक्षी काफी पसंद आई, और शादी के दौरान हीं वह काफी अच्छे दोस्त बन गए। इसलिए साक्षी के शादी तोड़ने के बाद, आशी ने उससे कहा था कि अगर, उसे कभी कोई भी मदद चाहिए हो, तो उसे कॉल करे।

इसलिए जब साक्षी ने घर छोड़ने का फैसला किया, तो उसने आशी को कॉल किया। तब आशी ने उसे दिल्ली में जाकर, उसकी मां के साथ रहने के लिए कह दिया। ताकि उसे भी रहने के लिए एक घर मिल जाए और उसकी मां को भी घर के कामों में थोड़ी हेल्प मिल जाए। पहले तो वह

सिर्फ जॉब ढूंढने तक हीं वहां रहना चाहती थी पर, आशी के मां के जिद करने पर, वह वहीं पर रहते हुए जॉब कर रही है।

देव की बातें सुनकर पहले वाले देव ने पूछा- क्या अब तक उसने शादी नहीं कि? नहीं, अभी वाले देव ने ना में सिर हिलाते हुए जवाब दिया।

अभी उनकी बातें हो हीं रही थी कि देव ने देखा, कि आशी अपनी मां के साथ सामने से चली आ रही है। उसने जल्दी से खुद को, और अपने पहले वाले स्वरूप को भी दीवार के पीछे छुपा लिया। और फिर, आशी के वहां से गुजरने के बाद उसका पीछा किया।

दोनों ने देखा, कि आशी अपनी मां के साथ देहरादून वाले ट्रेन में जाकर बैठ गई है। तब देव ने अपने पहले वाले स्वरूप से कहा- अब हमें भी जाना होगा, एक घंटा खत्म होने हीं वाला है। पहले वाले देव ने कहा- समय मेरा नहीं, सिर्फ तुम्हारे जाने का हुआ है।

तुम्हारे घड़ी में टाइम खत्म होने वाला है क्योंकि, तुम 1 घंटे का टाइमर लगाकर यहां आए हो। पर जब मैं आ रहा था, तो मैंने टाइम मशीन में वापस आने का कोई तारीख या समय नहीं डाला था। क्योंकि यहां रहकर हीं सभी चीजों को बदला जा सकता था, और अभी भी मुझे यहां रहकर हमारे असली वाले स्वरूप से (2022 वाला) जो इस वक्त, देहरादून रेलवे स्टेशन पर आने वाला होगा उससे मिलना होगा।

पर क्यों? मैं वही सब रोकने तो आया था। अगर तुम अभी हमारे असली स्वरूप से नहीं मिलोगे, तभी तो आशी अपनी असली लाइफ को फिर से जी पाएगी। असली वाला देव रेलवे स्टेशन पर थोड़ी देर इंतजार करने के

बाद, वापस केरल लौट जाएगा और सब पहले जैसा हो जाएगा। अभी वाले देव ने थोड़ा गुस्सा करते हुए कहा।

पहले वाले देव ने उसे समझाते हुए कहा- मैं हमारे वर्तमान वाले स्वरूप से मिलूंगा, पर उसे यहां आकर आशी से मिलने के लिए नहीं, बल्कि इस बार सिर्फ फोन करके, आशी से देहरादून ना आने की वजह पूछने के लिए कहूंगा। ताकि हमारी बातचीत बंद ना हो।

क्योंकि हमारे असली वाले स्वरूप (वर्तमान) को यह लगा था, कि शायद आशी यह डेट भूल गई थी और अब वह उसके लिए उतना इंपॉर्टेंट नहीं रहा, जितना पहले था इसलिए वह मिलने नहीं आई। पर हम यह देख रहे हैं, कि वह ट्रेन में बैठी थी।

इसलिए मुझे अब वह वजह जाननी है, जिसके वजह से वह देहरादून रेलवे स्टेशन पर नहीं पहुंच पाएगी।

अभी वाले देव को एहसास हुआ, कि वह बिल्कुल सही कह रहा है। इसलिए उसने अपने पहले वाले स्वरूप से कहा- ठीक है, मैं उम्मीद करता हूं कि इस बार सब ठीक होगा। तुम वैसे भी, अभी ना गायब हो सकते हो और ना ही वापस जा सकते हो, तो मैं अब जाता हूं। मैंने अपना काम कर दिया है, तुम्हें आशी के साथ हमारा भविष्य बता कर। अब सब कुछ तुम पर है, मेरा वक्त तो वापस जाते के साथ ही खत्म हो जाएगा। क्योंकि उसके बाद का भविष्य अभी बना हीं नहीं है, पर तुम्हारे पास अभी पूरे 8 साल हैं, हमारे वर्तमान को सही करने के लिए।

इतना कहते हुए, दूसरा वाला देव वहां से गायब हो जाता है। और पहले वाला देव, खुद से वादा करता है कि मैं भी अपनी पूरी कोशिश करूंगा,

कि हमारे असली स्वरूप को किसी भी तरह का रिग्रेट करने का मौका ना दूं।

यह सोचकर वह भी देहरादून वाली ट्रेन में मास्क पहनकर उसी डिब्बे में चढ़ जाता है, जिसमें आशी अपनी मां के साथ बैठी थी।

ट्रेन स्टार्ट हो चुकी थी, देव उन दोनों के पास हीं खड़ा था। तत्काल में उसे कोई सीट नहीं मिली थी, पर उसे कोई प्रॉब्लम नहीं थी। बल्कि, उसे यही ज्यादा सही लगा। क्योंकि, इस तरह वह उन लोगों की बातें भी सुन सकता था।

थोड़ी देर में हीं उसने सुना की आशी की मां, आशी से कह रही थी- मुझे तो अभी भी समझ नहीं आ रहा, कि तुमने आज हीं की टिकट क्यों ली। हम कुछ दिन बाद, अच्छे से तैयारी करके चलते। अब कम से कम अपनी आंटी को फोन करके बता तो दो।

बता दूंगी, पहले हम पहुंच तो जाएं। आशी ने अपनी मां को शांत करते हुए कहा। क्या तुझे घर देखा हुआ है? वहां जाकर फोन करोगी, तो हमें स्टेशन पर हीं पता नहीं, कितनी देर वेट करना होगा। या तेरी देव से बात हो गई है, वह आ रहा है क्या? आशी की मां ने आशी की ओर देखते हुए पूछा।

आशी ने जवाब में सिर्फ, शायद कहा। और फिर इयरफोंस का एक सिरा अपनी मां के कानों में लगाते हुए कहा- अब यह सब छोड़ो, और गाने सुनो। आशी गाने सुनते हुए बाहर की ओर देख रही थी, और देव उसे।

थोड़ी देर बाद डिब्बे में कुछ जलने का और धुआं का एहसास, सभी यात्रियों को होने लगा। इतने में हीं एक इंसान चिल्ला उठा- चैन खींचो,

डिब्बे में आग लगी है। यह सुनते हीं सब हड़बड़ा गए। लोगों को हड़बड़ाता देख आशी की मां भी थोड़ी घबरा रही थी। आशी उन्हें दिलासा दे रही थी। तभी डिब्बे की रफ्तार थोड़ी धीमी हुई। किसी ने चेन खींच दिया था। आग धीरे-धीरे बढ़ रही थी, इसलिए काफी सारे लोग घबराते हुए दूसरे डिब्बे में जाने लगे थें।

आशी और उसकी मां भी, सीट से उठने लगे थें। तभी देव ने देखा, की ट्रेन रुक गई है। इसलिए उसने तेज आवाज में लोगों को शांत करते हुए कहा- कृपया घबराइए नहीं, ट्रेन रुक चुकी है सब एक-एक करके ट्रेन से उतर जाइए।

जैसे हीं लोगों ने ध्यान दिया, की ट्रेन सच में रुक गई है, सब अपनी जान बचाने के लिए दरवाजे की ओर दौड़ पड़े।

ट्रेन में आग लगने की खबर अब तक, उस ट्रेन में मौजूद रेल कर्मचारियों को मिल गई थी। देव ने देखा, आशी की मां भी डिब्बे से बाहर निकलने के लिए हड़बड़ा रही थीं। पर आशी ने उन्हें समझाया- सबको जाने दो फिर हम जाएंगे, वरना हमें चोट लग सकती है।

देव अभी भी उनके पास खड़ा था। कुछ ही सेकंड में डिब्बा पूरा खाली हो गया। अब तक आशी, उसकी मां और देव खुद भी डिब्बे से उतर चुके थें।

रेल कर्मचारियों ने उस डिब्बे को ट्रेन से अलग कर दिया, और लोगों को दूसरे डिब्बे में चढ़ाया। पर कुछ लोग काफी घबराए हुए थें और आगे की यात्रा नहीं करना चाहते थें।

आशी की मां ने भी, आशी से वापस घर चलने को कहा। आशी ने भी अपनी मां की हालत को समझते हुए जिद नहीं की, और घर जाने के लिए कैब बुक कर लिया।

कुछ हीं देर में सभी लोगों ने मिलकर, उस डिब्बे में लगे आग को बुझा दिया। और अब ट्रेन, अपनी बाकी के डिब्बों में सवार यात्रियों को उनकी मंजिल तक पहुंचाने के लिए तैयार थी।

देव ने देखा, कि आशी की कैब भी वहां पहुंच चुकी थी और वह उसमें बैठ रही थी। उसके चेहरे पर उदासी थी, पर उसकी मां भगवान का शुक्र मना रही थी कि वे किसी बड़े हादसे का शिकार नहीं हुए। देव को भी इस बात की तसल्ली थी कि वह लोग ठीक थें, इसलिए वह वापस ट्रेन में बैठ गया, अपने आगे के कार्य को पूरा करने के लिए।

देव (2030 वाला) देहरादून पहुंच चुका था, और 2022 वाला देव भी प्लेटफार्म के पास खड़ा था। देव गाड़ी से उतरकर, 2022 वाले देव के पास जाकर खड़ा हो गया। छोटे वाले देव का पूरा ध्यान, सिर्फ ट्रेन की ओर था। और 2030 वाले देव को, उसे इस तरह देखकर हंसी आ रही थी।

उसने अपने छोटे वर्जन के थोड़ा नजदीक जाते हुए कहा- नहीं आएगी। यह सुनकर छोटा देव, थोड़ा कंफ्यूज होता हुआ उसकी ओर देखने लगा। उसने देव से पूछा- क्या आपने, मुझसे कुछ कहा?

2030 वाले देव ने कहा- हां, वह लड़की जिसका तुम इंतजार कर रहे हो, वह नहीं आएगी। छोटे देव ने थोड़ा गुस्से में, उसकी ओर घूरते हुए कहा- आप कोई बाबा हो,जिसे सब पता है। किसी और को जाकर लूटिए।

देव को हंसी आ गई। अगर, वह उसे अचानक से अपना चेहरा दिखाये और डायरेक्ट यह बोले, कि यह मैं हूं, तुम्हारा भविष्य से आया वर्जन। तो पता नहीं, यह कैसे रिएक्ट करेगा।

क्योंकि अभी थोड़ी देर पहले, जब उसके साथ यह हुआ था तो वह खुद भी हैरान हो गया था। पर क्योंकि उसने टाइम ट्रेवल किया था, तो उसे बातों को समझने में ज्यादा देर नहीं लगी। पर यह तो अभी डॉक्टर खन्ना से मिला भी नहीं होगा क्योंकि, जहां तक मुझे याद है डॉक्टर खन्ना ने बताया था कि उन्होंने जून 2022 में इसरो ज्वाइन किया था। उसके पहले वह भी दिल्ली में हीं रहते थें।

देव अभी यह सब सोच हीं रहा था, कि उसे महसूस हुआ कि छोटा देव अभी भी बार-बार उसकी ओर देख रहा है। वह कुछ बोलता, उसके पहले हीं देव ने कहा- आशी, तुम उसी का इंतजार कर रहे हो ना?

यह सुनकर छोटा वाला देव तुरंत बोल पड़ा- आपको कैसे पता, कि मैं किसी आशी..

अभी उसने अपना वाक्य पूरा भी नहीं किया था, कि देव फिर बोल पड़ा- तुम अभी केरल के IIST यूनिवर्सिटी में लास्ट ईयर में हो। तुम्हें साइंटिस्ट बनना है, और इसरो में काम करना है। आशी तुम्हारे बचपन की फ्रेंड है, जिससे तुम 6 साल से आमने-सामने नहीं मिले हो। और उसने हीं मिलने के लिए, यह दिन डिसाइड किया था।

इतना सुनकर छोटा वाला देव बोल पड़ा- तुम हो कौन? और मेरे बारे में इतना कैसे जानते हो?

देव ने अपना मास्क हटाते हुए कहा- प्लीज, चिल्लाना मत। छोटे वाले देव ने, जैसे हीं उसका चेहरा देखा उसके मुंह से जैसे आवाज निकालना ही बंद हो गया। वह बस एकटक, अपने सामने खड़े देव को देखे जा रहा था। जिसकी सूरत, बिल्कुल उसके जैसी थी। बस वह उम्र में उससे सात-आठ साल बड़ा दिख रहा था।

देव ने छोटे देव से कहा, कहीं बैठकर बात करते हैं। छोटा देव उसके पीछे-पीछे चल पड़ा। उसके चेहरे से हीं पता चल रहा था, कि वह बहुत कंफ्यूज है। उसे कुछ समझ नहीं आ रहा था, कि यह सब क्या हो रहा है। देव, उसे पास के एक रेस्टोरेंट में ले गया। और उसे धीरे-धीरे सारी बातें बताईं।

देव को पता था, कि उसकी बातों पर वह इतनी जल्दी विश्वास नहीं करेगा। इसलिए उसने छोटे देव को, आशी को फोन करके, उसके ना आने का कारण पूछने के लिए कहा। ताकि उसे थोड़ा तो विश्वास हो जाए, कि वह सच कह रहा है।

शाम हो चुकी थी इसलिए देव ने, छोटे देव को अपना नंबर देते हुए कहा- कल जब तुम आशी से बात कर लो और तुम्हें मुझ पर थोड़ा सा भी यकीन हो, तो मुझे इस नंबर पर कॉल कर लेना। ऐसा कहकर वह जाने लगा। तभी उसके मोबाइल की रिंग बज पड़ी। उसने मोबाइल निकला, नंबर देखते हीं वह, छोटे वाले देव की ओर मुड़ा और फोन नंबर को दोहराते हुए कहा- यह मेरा पुराना नंबर था, मतलब तुमने अभी मुझे कॉल किया। है ना?

छोटे देव की नजर, देव के फोन पर थी। जो थोड़ा अलग-लग रहा था। देव को समझते देर नहीं लगी, कि उसका छोटा वर्जन यह जानने की कोशिश कर रहा है, की क्या वह सच में भविष्य से आया है या नहीं।

इसलिए देव ने, अपना मोबाइल उसके सामने टेबल पर रखते हुए कहा- यह मॉडल तुम गूगल करके देख सकते हो, क्या यह अभी मौजूद है। वैसे मैं बता दूं, मेरे मोबाइल में गूगल नहीं है।

छोटे वाले देव ने बिल्कुल ऐसा हीं किया। और सर्च करने पर यह कंफर्म हो गया, कि इस तरह का मॉडल 2022 में, या उसके पहले भी नहीं था। फिर देव ने, छोटे वाले देव के फोन के फीचर्स के बारे में उसे डिटेल में बताया। यहां तक की यह भी, की यह फोन उसने कहां से और कब खरीदी थी। उसके फोन में लगे सभी पासवर्ड्स भी, उसने छोटे देव को बता दिएं।

यह सब जानने के बाद, छोटे देव ने कहा- तुम भविष्य से आए हो ना, तो फिर मुझे आने वाले दिनों में होने वाले कोई हादसे या मुख्य खबरों के बारे में बताओ।

देव ने बताया- इस साल कोई बहुत बड़ी घटना या एक्सीडेंट तो नहीं होगा पर, रूस ने यूक्रेन पर जो हमला किया है वह 28 अगस्त को शांत हो जाएगा। सितंबर में यूके की महारानी एलिजाबेथ द्वितीय की मृत्यु हो जाएगी। पाकिस्तान में बाढ़ के कारण आर्थिक तंगी होगी। और हां, कल रिलीज होने वाली फिल्म केजीएफ 2, अभी तक की सबसे ज्यादा कमाई वाली फिल्म बनेगी। यह कहते हुए देव थोड़ा मुस्कुरा दिया।

छोटा देव कुछ और पूछता, इससे पहले देव ने कहा- मुझे लगता है आज के लिए इतना काफी है, अब मैं आराम करने जा रहा हूं। वैसे भी एक तरह

से देखा जाए, तो मैं अभी वैकेशन पर हूं। तो कम से कम, अभी तो खुद को थोड़ा आराम दे दूं। ऐसा कहकर उसने छोटे देव से पूछा- क्या अब घर चलें? मम्मी इंतजार कर रही होगी। आखिर, कई दिनों बाद तुम घर आए हो। ओह, मैं भूल हीं गया था, कि मैं घर नहीं जा सकता । मुझे पास के किसी होटल में रूम ले लेना चाहिए। ऐसा कह कर देव चल दिया। छोटा देव भी थोड़ी देर बाद घर की ओर निकल गया।

घर पहुंचने के बाद भी 22 साल का देव, 2030 से आए देव के बारे में हीं सोच रहा था। उसे बस यह रात बीतने का इंतजार था। सोचते-सोचते वह कब सो गया, उसे भी पता नहीं चला। जब उसकी नींद खुली, सुबह के 8:00 बज चुके थें। उसकी मां, उसे आवाज दे रही थी। वह बेड से उठा, और दरवाजा खोला। उसकी मां बाहर खड़ी थी, उन्होंने पूछा- क्या बात है? तुम ठीक तो हो ना? कल भी तुम पूरा दिन घर से गायब थे। और, पहले तो इतनी देर तक कभी नहीं सोते थे। कुछ हुआ है क्या?

नहीं मां, चिंता वाली कोई बात नहीं है। मैं बस थोड़ा थक गया था। अच्छा वो सब छोड़ो, तुम ये बताओ कि आज तुमने खाने में क्या बनाया है। बहुत दिन हो गए हैं, तुम्हारे हाथ का खाना खाए हुए। देव ने अपनी मां के हाथों को पकड़ते हुए कहा। उसकी मां ने, देव के गाल पर हाथ फेरते हुए कहा- सब कुछ तुम्हारी पसंद का है, जल्दी से फ्रेश होकर नीचे आ जाओ। ऐसा कहते हुए, वह किचन की ओर चली गई।

थोड़ी देर बाद खाना खाते हुए, उसकी मां ने पूछा- क्या तुम्हारी आशी से अभी बात होती है? देव ने कहा- बहुत कम, शायद हम दोनों हीं बहुत बिजी हो गए हैं। पर आपकी तो आंटी से बात होती है ना? देव ने अपनी मां की ओर, देखते हुए पूछा। उसकी मां ने भी कहा- हां, कभी-कभी।

कभी-कभी जब मिलने का मन करता है, तो समझ ही नहीं आता कि किस बहाने से मिला जाए। पिछली बार उन्हें यहां आने के लिए कहा था, पर एन वक्त पर लॉकडाउन के कारण तुम नहीं आ पाए, और सारा प्लान खराब हो गया। और अकेले मुझे भी जाने का मन नहीं करता। तो मैं सोच रही थी, कि हम कल हीं दिल्ली चलें, वैसे भी तुम ज्यादा दिनों के लिए तो आए नहीं हो। देव, देखता हूं कह कर, अपना खाना खाने में बिजी हो गया।

उसे तो पहले आशी को फोन करके यह कंफर्म करना था, कि जो कल 2030 से आए हुए देव ने कहा, वह सच है, या नहीं। आशी उससे मिलना भी चाहती है, या नहीं। इसलिए उसने खाना खाने के बाद, सबसे पहले आशी को कॉल लगाया।

आशी ने उसे, वहां ना पहुंच पाने के लिए सॉरी कहा। और कल की सारी बात बताई। यह सुनकर देव ने फैसला किया, कि वह अपनी मम्मी के साथ कल हीं आशी से मिलने जाएगा। पर उससे पहले, उसे 2030 वाले देव से मिलना था। इसलिए कुछ देर बाद वह उससे मिलने, होटल निकल गया।

होटल पहुंचने पर उसने बताया, कि वह कल आशी से मिलने जा रहा है। 2030 वाले देव ने उसे हिदायत दी, कि वह आशी से केवल एक फ्रेंड के तरह हीं मिले। उससे ज्यादा कुछ बनने की कोशिश ना करे। क्योंकि कभी-कभी हमारा प्यार हीं, उनकी सफलताओं के बीच आ जाता है। इसलिए अच्छा होगा, कि हम सिर्फ एक अच्छे दोस्त बन कर रहें।

छोटे देव को अभी 2030 वाले देव पर पूरा भरोसा तो नहीं हुआ था, पर उसे पता था कि उसे जल्दबाजी में कोई फैसला करने की जरूरत नहीं है। इसलिए उसने अभी के लिए, देव की बात मान ली। आशी से मिलने पर, वह उससे बिल्कुल पहले की तरह, एक फ्रेंड के जैसे हीं मिला।

दो दिनों बाद जब वह वापस देहरादून आया, तब देव ने उसे शांति से अपने पढ़ाई पर फोकस करने के लिए कहा। और बस कभी-कभी आशी को फोन करते रहने के लिए। छोटे देव ने ऐसा हीं किया।

इस तरह डेढ़ साल बीत गए। छोटे देव को अब धीरे-धीरे 2030 वाले देव पर यकीन हो गया था। क्योंकि उसकी बताई हर बात सच हो गई थी।

दिसंबर 2023

हेलो, हां मां बोलिए। छोटे देव ने अपनी मां का फोन उठाते हुए कहा। दूसरे साइड से उसकी मां ने कहा- कितने महीने हो गए हैं तुमसे मिले हुए, इस बार तो आ रहे हो ना? तुम्हारी मामी जी के मायके से कॉल आया था, उनके घर में शादी है। मैं भी बहुत दिनों से सबसे नहीं मिली हूं, इसी बहाने सबसे मिलना हो जाएगा। उन्होंने तुम्हें भी साथ लाने कहा है।

ठीक है, वैसे भी यहां कुछ दिनों की छुट्टियां शुरू होने वाली है। तो मैं वहां आ जाऊंगा, अब खुश। चलो अब मैं रखता हूं। ऐसा कहते हुए छोटे देव ने फोन रख दिया,और तुरंत देव (2030 वाले को) को कॉल लगाया।

देव के कॉल उठाते हीं उसने पूछा- तुमने मुझे कभी यह नहीं बताया, कि तुम अपने समय में वापस कब और कैसे जाओगे।

देव ने उससे पूछा- अभी 2022 के अनुसार, असली देव कौन है? तुम या मैं। छोटे देव ने जवाब दिया- मैं।

देव ने फिर पूछा- और 2030 तक जाकर, इस समय में वापस कौन आया है? छोटे देव ने थोड़ा सोच कर जवाब दिया, मैं। तब देव ने कहा- अब जब कि तुम, सितंबर 2030 से वापस इस समय में आए हो, तो आगे भविष्य बना ही नहीं है। तो मैं वापस कहां जाऊंगा? जब तुम अपना जीवन उस समय तक जी लोगो, जब तुमने टाइम ट्रेवल किया था। तो मैं गायब हो जाऊंगा, क्योंकि मैं तुम्हारा बीता हुआ कल बन जाऊंगा।

पर तुमने तो कहा था, कि मैंने दो बार टाइम ट्रेवल किया, तो फिर दूसरी बार में मैं तुरंत गायब क्यों हो गया? छोटे देव ने फिर से पूछा।

इस पर 2030 वाले देव ने उसे समझाया- अगर तुम एक घड़ी में समय के अनुसार, मतलब आधे घंटे या 1 घंटे बाद का अलार्म लगाओ तो वह लगाए गए समय से आधे या, 1 घंटे बाद हीं बजेगा। पर अगर तुम उसमें कोई डेट सेट कर दो, तो वह उसी तारीख को बजेगा। वैसे हीं, टाइम मशीन 2030 में है, अगर उसमें 1 घंटे का समय डाला जाए तो वहां भी 1 घंटे बीतने पर वह अपना काम करेगी। पर अगर उसमें तारीख डाली जाए, तो वह उस तारीख को एक्टिवेट होगी।

मतलब मैं यहां 2022 में,11 सितंबर 2030 से आया हूं। यदि मैं 12 सितंबर 2030, वापस जाने की तारीख रखता, तो 2030 में तो वह सिर्फ एक दिन हुआ, पर 2022 में उस समय को आने में 8 साल लगेंगे। और अगर मैंने दो-तीन साल का समय डाला होता तो वहां पर भी, 2030 के दो-तीन साल बाद हीं पहुंचता। इसलिए मेरे पास सिर्फ दो ऑप्शन थें, या

तो कुछ घंटे के लिए पास्ट में जाया जाए, या फिर उसके एक दिन बाद की तारीख वापस आने के लिए डाली जाए जब मैं टाइम ट्रेवल कर रहा हूं।

इसलिए पहली बार तुमने जब टाइम ट्रेवल किया, तब कोई भी समय या डेट तुमने वापस जाने के लिए सेट नहीं किया था। क्योंकि तुम्हें उन सब घटनाओं को चेंज करना था जिससे तुम और आशी दूर हुए थे। और उस दिन की तारीख डालने का कोई मतलब ही नहीं बनता, क्योंकि वह समय पार हो जाने के बाद, दूसरा वाला खुद ही गायब हो जाएगा।

यह सब सुनकर छोटे देव ने कहा- मतलब तुम्हें अभी और साढ़े 6 साल, अकेले बिना किसी की नजरों में आए गुजारने हैं। हालांकि तुम, भविष्य में, मैं ही रहूंगा पर, अगर इस बार सब ठीक रहा तो मुझे वापस आने की जरूरत हीं नहीं होगी। और ऐसा हुआ तो, ना हीं तुम होगे, और ना यह अकेलापन झेलने का एहसास। राइट? देव ने जवाब दिया- शायद, हां।

थोड़ी देर के लिए दोनों तरफ शांति छा गई। फिर देव ने वापस बात शुरू करते हुए कहा- अच्छा ये बताओ, तुम कुछ दिनों बाद देहरादून तो आ रहे हो ना?

छोटे देव ने पूछा- हां, क्या कुछ खास होने वाला है?

देव ने कहा- हां, हो सकता है तुम्हारी वजह से किसी को अपना घर मिल जाए। छोटे देव ने पूछा- मतलब? देव ने कहा- तुम्हें वक्त आने पर समझ आ जाएगा।

15 दिसंबर 2023

चारों ओर चहल पहल और रौनक थी, सब बारात के स्वागत की तैयारीयों में जुटे थें। जैसे हीं बारात दरवाजे पर आई, दुल्हन के परिवार वालों ने उनका मालाओं से स्वागत किया। रीति-रिवाज के अनुसार दूल्हे की नजर उतारी गई। अब बारी थी दूल्हे की नाक खींचने की। इस रस्म का सीधा सा मतलब था, कि जिस तरह मां अपने बेटों की नाक प्यार से खींचती है, यह जताते हुए कि उसकी कोई बदमाशी उनके सामने नहीं चलेगी, वैसे हीं दुल्हन की मां भी उसी भाव से अपने दामाद की नाक खींचती है।

पर जब दुल्हन की मां ने दूल्हे की नाक खींचनी चाही, तो लड़के वालों ने दूल्हे को नाक ऊंची रखने के लिए कह दिया। वह उसे समझा रहे थे, कि अगर तुमने अभी अपनी नाक छूने दी तो ससुराल वाले हमेशा तुम पर हुक्म जमाते रहेंगे। इस पर दूल्हे ने बिना अपना दिमाग चलाए उनकी बात मानी और अपनी नाक किसी को छूने नहीं दी।

थोड़ी देर बाद जयमाला शुरू हुआ। लाल जोड़े में सजी दुल्हन दूल्हे को वरमाला पहनाने हीं वाली थी, कि दूल्हे के दोस्तों ने उसे कंधे पर उठा लिया। थोड़ी देर दुल्हन वैसे हीं खड़ी रही। अब दूल्हे के दोस्त कब तक दूल्हे का बोझ उठाते, सो उन्होंने उसे नीचे उतार दिया। पर यह कहते हुए की, अपनी गर्दन मत झुकाना वरना सारी उम्र बीवी के सामने गर्दन झुका कर हीं रहना पड़ेगा।

लड़का था तो पढ़ा लिखा पर अक्ल से बेवकूफ और दोस्त भी पढ़े लिखे गंवार। उन्हें शायद यह पता ही नहीं था, कि दूल्हा- दुल्हन सर झुका कर हीं वरमाला पहनते हैं जिसका मतलब होता है, कि आप हमें स्वीकार हैं।

दुल्हन ने दूल्हे से पूछा- आपको शादी करनी तो है ना? इस पर दूल्हे के बजाय, उसके दोस्तों ने जवाब दिया-अरे भाभी जी, शादी तो होगी हीं पर हमारा भाई सर नहीं झुकाएगा। ऐसे हीं वरमाला डालिए।

दुल्हन ने अपने परिवार वालों की तरफ देखा, उन्होंने इशारों में उसे माला डालने के लिए कहा। दुल्हन ने थोड़ा उचकते हुए दूल्हे के गले में वरमाला डाल दी। दूल्हा अब दुल्हन के गले में वरमाला डालने गया। दुल्हन ने भी अपना सर नहीं झुकाया। पर वह लंबाई में दूल्हे से कम थी, इसलिए दूल्हे को कोई परेशानी नहीं हुई।

अब बारी, मुंह मीठा करने की थी। पर इस बार भी दूल्हे ने दुल्हन के हाथों से मिठाई नहीं खाई, पर उसने दुल्हन के मुंह में जबरन मिठाई ठूंस दी। इस हरकत से दुल्हन के चेहरे पर गुस्सा साफ झलक रहा था।

उसने आगे की रस्म किए बिना हीं अपने पिताजी से जाकर पूछा- क्या यह इंसान मेरे लिए ठीक होगा? उसके पिताजी ने उसे समझाते हुए कहा- शादी में यह सब मस्ती मजाक आजकल का फैशन है, कोई बड़ी बात नहीं है। दुल्हन ने कहा- मस्ती, विवाह में मस्ती कब से होने लगी।

आपको तो घर के पूजा-पाठ में, बच्चों का शोर करना भी पसंद नहीं आता था। और यहां सभी रस्मों का मजाक बनाया जा रहा है। यह कहकर दुल्हन अपने कमरे की तरफ जाने लगी।

इतने में किसी ने कहा- अरे, लड़की ने अपने पति के पैर तो छुए हीं नहीं। दुल्हन यह सुनकर पलटी, उसने देखा सभी लोग आपस में कानाफूसी कर रहे थें। बारातियों में से एक ने कहा- लगता है लड़की वालों ने, अपनी बेटी को थोड़े से भी संस्कार नहीं दिए। पति परमेश्वर होता है, यह तो शादी वाले दिन हीं पांव नहीं छू रही है। पता नहीं आगे चलकर, अपने पति की थोड़ी सी भी इज्जत करेगी या नहीं।

इतने में हीं दुल्हन की मां ने, दुल्हन से कहा- साक्षी, जाकर दामाद जी के पैर छू लो, रस्म अधूरा नहीं छोड़ते। दुल्हन ने कहा- सभी रस्में तो अधूरी हीं हुई हैं, इसे भी अधूरा रह जाने दो। इतने में दूल्हे के पिता बोल पड़े- समधी जी, यह सब क्या हो रहा है? आप लोगों को शादी करवानी है या नहीं।

दुल्हन के पिता बोल पड़े- आप कैसी बातें कर रहे हैं, साक्षी को हमसे कुछ पूछना था इसलिए वह अचानक हमारे पास आ गई। इतना सुनकर, दूल्हे के पिताजी ने फिर कड़क आवाज में कहा- बातें बाद में होती रहेंगी, पहले रस्म पूरा करवाइए।

अब दुल्हन के परिवार वाले, दुल्हन को जबरदस्ती स्टेज पर ले गए और अपनी कसम देकर उसे पैर छूने पर मजबूर किया। दुल्हन ने, फिर हार मान ली।

खाने के वक्त भी लड़के और लड़की वालों के बीच अनबन होने लगी। कुछ लोगों ने यही कहकर बात शांत करवाई, की लड़की वालों को थोड़ा झुकना हीं पड़ता है।

दुल्हन को तो यह सब देखकर समझ ही नहीं आ रहा था, कि यह लोग शादी करने आए हैं या सिर्फ अपना रौब जमाने। विवाह जैसे शुभ कार्य पर यह लोग झगड़ा, करते कैसे हैं? पूजा-पाठ, हवन इन सब कार्यों में तो इतना हंगामा नहीं होता। और लड़की वालों को हीं हमेशा सर झुकाने क्यों कहा जाता है।

लड़के वाले अपना वंश आगे बढ़ाने के लिए, लड़की ले जाने की इच्छा रखते हैं। और दहेज, गिफ्ट यह सब भी मांगते हैं फिर भी पता नहीं, इन्हें किस बात का घमंड होता है।

ये सभी बातें, दुल्हन अपने कमरे में बैठकर अपने दोस्तों और अन्य लोगों के सामने बोले जा रही थी।

उस कमरे में देव की मां भी मौजूद थीं। उन्होंने दुल्हन, जिसका नाम साक्षी था, उसे शांत कराते हुए कहा- दुनिया में समझदार लोगों की कमी हो गई है, और यह दुनिया हमेशा जिसका पलड़ा भारी होता है उधर की ओर हीं झुकती है। इसलिए सामने वाला चाहे सही हो या गलत, कोई फर्क नहीं पड़ता। और वो लोग जिन्हें सही गलत की पहचान होती है, वह तुम्हारी तरह परेशान होकर खुद से सवाल करते रहते हैं।

पर समझदार इंसान उसे कहते हैं, जो अपने सवालों का खुद जवाब ढूंढ ले, और निर्णय लेने की क्षमता रखता हो।

यह सुनकर साक्षी ने कहा- आंटी मुझे जवाब पता है, कि मुझे यह शादी नहीं करनी चाहिए पर....

पर तुम ऐसा कुछ नहीं कर पाओगी, क्योंकि तुम्हें पता है कि तुम सब का सामना नहीं कर सकती। और अकेले अपने दम पर जिंदगी चलाना बहुत मुश्किल होगा। देव की मां ने साक्षी से कहा।

इस पर साक्षी ने उनसे कहा- नहीं, मैं इतनी काबिल तो हूं, कि अपना बोझ खुद उठा पाऊं। पर अगर मैं अभी शादी तोड़ती हूं, तो मेरे परिवार को बहुत कुछ सुनना पड़ेगा। यह सुनकर देव की मां ने कहा- तो फिर सोचो मत, जो हो रहा है होने दो। और सब कुछ अपनी किस्मत पर छोड़कर शादी कर लो।

वहां खड़ी साक्षी की कुछ दोस्त भी बोल पड़ीं- हां, वैसे भी यह शादी ब्याह किस्मत की बात होती है, तो यह बकवास छोड़ो। मंडप पर जाने का समय हो गया है, अगर अभी नहीं चलोगी तो फिर से हंगामा शुरू हो जाएगा।

साक्षी के दोस्त, उसे अपने साथ पकड़कर मंडप तक ले आए। पर साक्षी अभी भी सोच में डूबी हुई थी।

धीरे-धीरे शादी की सभी रस्में हो रही थीं, पर साक्षी का ध्यान शादी में नहीं था। अचानक, उसके पैर लड़खड़ाए, फेरे चल रहे थें और लड़का आगे-आगे बिना किसी बात की चिंता किए, बढ़े जा रहा था। उसे तो पता भी नहीं चला, कि उसकी दुल्हन अभी गिरने वाली थी।

अब सिंदूरदान का समय आ गया था। दूल्हे ने, रस्म के हिसाब से दुल्हन की मांग भरी। इतने में हीं किसी ने दूल्हे से कहा- सिंदूर सुहाग की निशानी होती है, तो अच्छे से मांग भरो। दिखना चाहिए कि वह तुम्हारी हो गई है।

इतना सुनते हीं, लड़के ने हाथ में सिंदूर लिया और दुल्हन बनी साक्षी के सर पर घसीट दिया।

साक्षी जो कि सिर्फ अपने तलवों के दम पर बैठी थी, खुद को संभाल नहीं पाई और गिरते हुए धम्म से बैठ गई। शायद उसे थोड़ी चोट लगी थी। वह अचानक खड़ी हुई और ऊंचे स्वर में बोल पड़ी- यह क्या तरीका है? खुद का दिमाग है या नहीं तुम्हारे पास, जो दूसरों की हर बात माने जा रहे हो।

सब लोग साक्षी को हैरान नजरों से देखने लगे। इतने में कोई बोल पड़ा- देखो तो, यह लड़की अपने पति पर कैसे चिल्ला रही है।

साक्षी ने कहा- पति, कैसा पति? कोई भी रस्म, सही से तो हुई हीं नहीं, तो यह मेरा पति कैसे बन गया? इतने में, लड़के वालों की तरफ से एक औरत बोल पड़ी- कैसी पागल लड़की है ये, फेरे हो गए, लड़के ने अभी इसे सिंदूर लगाया। फिर भी यह कह रही है, कि यह इसका पति नहीं है।

साक्षी ने उससे कहा- अभी कोई आकर आपको सिंदूर लगा दे, तो क्या आप उसकी पत्नी बन जाओगी? औरत ने कहा- ओ पागल लड़की, मेरे मांग में पहले से हीं मेरे पति के नाम का सिंदूर है। तो कोई और क्यों लगाएगा।

साक्षी ने कहा- और अगर, गलती से किसी के हाथों आप पर सिंदूर गिर गया तो? औरत ने कहा- तो वह मेरा पति थोड़े हो जाएगा। साक्षी ने कहा- क्यों? आखिर उसके द्वारा सिंदूर तो लग गया ना, तो आपको उसे पति मान लेना चाहिए।

वह औरत चिल्लाते हुए बोली- मैं उसे अपना पति क्यों मानूंगी, कोई जबरदस्ती है क्या? साक्षी ने कहा- तो फिर आप लोग, जबरदस्ती मुझे

इसे अपना पति मानने के लिए क्यों कह रहे हैं। शादी पूरी तब मानी जाती है, जब दोनों एक दूसरे को मन से स्वीकार कर लें। और मुझे यह स्वीकार नहीं है। इसने तो, शुरू से शादी को मजाक समझा हुआ था।

दूल्हा जो अब तक चुप था, बोल पड़ा- ज्यादा बकवास मत करो, तुम मानो या ना मानो पर शादी तो हो गई है। और अब मैं हीं तुम्हारा पति हूं। साक्षी ने कहा- चलो ठीक है, मान लिया की शादी हो गई है। तो मैं यह शादी, अभी इसी वक्त तोड़ रही हूं। अब निकलो यहां से।

यह सुनकर साक्षी के घर वाले भी बोल पड़े- बेटी, यह तुम क्या बोल रही हो? पर, साक्षी ने उन्हें कोई जवाब नहीं दिया।

अब लड़के के पिताजी ने कमान संभाली। उन्होंने तेज आवाज में कहा- मैं आखिरी बार पूछ रहा हूं, आप अपनी बेटी की विदाई करेंगे या हम इस लड़की को मंडप में ही छोड़कर चले जाएं। साक्षी के पिता हाथ जोड़ उनसे माफी मांगने लगें और उसकी मां रोते हुए साक्षी को मनाने आ गई।

पर साक्षी ने अपना इरादा नहीं बदला।

यह देखकर दूल्हे के पिता बाहर जाने लगे, और दूल्हे और अन्य बारातियों को भी वापस चलने के लिए कहा। वहां खड़े सब लोग साक्षी को समझाने में लग गए। कुछ लोग तो उसे अपशब्द भी कह रहे थें। उसके माता-पिता और घर वाले, बारातियों को रोते हुए रुकने के लिए कह रहे थें।

इतने में साक्षी ने आवाज लगाई- रुकिए, सबको लगा शायद दुल्हन कि अक्ल ठिकाने पर आ गई है। और देखा जाए, तो यह बात बिल्कुल सही थी।

साक्षी ने कहा- मेरे माता-पिता ने आप लोगों को जो दहेज में पांच लाख दिया था, वह आप लोग कब लौटायेंगे? यह बता कर जाइए।

साक्षी की यह बात सुनकर सब चौंक गए। दूल्हे के पिता भड़क कर बोल पड़े- पैसे, हमारी इतनी बेइज्जती होने के बाद तुम हमसे पैसे मांग रही हो। साक्षी ने कहा- वह मेरे परिवार वालों के पैसे हैं, जब यह शादी टूट रही है तो आपका फर्ज बनता है कि वह पैसे आप लौटा दें। क्योंकि उस पर आपका कोई हक नहीं है, और अगर ऐसा नहीं हुआ तो मैं पुलिस में आपकी कंप्लेंट दर्ज करवा दूंगी।

दूल्हे का पिता बोल पड़ा- हमने तो सोचा था, कि कुछ दिनों बाद जब तुम्हें अकल आ जाएगी तब हम तुम्हें अपना लेंगे। पर अब तो तुम लोग रोते हुए भी आओगे, तो भी हम तुम्हें नहीं अपनाने वाले।

साक्षी ने उनकी आंखों में देखते हुए कहा- मैं आपको पागल दिख रही हूं जो वापस इस रिश्ते को जोड़ना चाहूंगी, ताकि आप लोग मुझसे बदला ले पाएं।

दूल्हे के पिता ने गुस्से में कहा- पागल तो तुम अब बनोगी, जब यह रिश्ता टूटने पर सब तुम्हें ताने दे देकर मार देंगे। तुम्हारा परिवार हीं तुम्हें धक्के देकर बाहर निकाल देगा, और लोग तुम्हें नोच खाएंगे।

साक्षी ने कहा- यह सब आपको फिक्र करने की जरूरत नहीं है, मुझे पता है कि यह दुनिया आप जैसे भेड़ियों से भरी पड़ी है। सब ने कहा था कि यह शादी किस्मत की मर्जी से हो रही है, पर जब मैंने इसे तोड़कर अपनी किस्मत बदलने का फैसला किया है। तो आगे भी जो होगा मैं खुद देख

लूंगी। पर आप हमारे पैसे लौटाना मत भूलिएगा, वरना लोग आपको भी लालची और चोर कहेंगे।

दूल्हे के पिता ने, पैर पटक कर बाहर जाते हुए कहा- मैं तेरे एक-एक पैसे, दो दिन के अंदर हीं तेरे मुंह पर मारने आ जाऊंगा। बारात वापस चली गई। सब अपनी किस्मत का रोना रो रहे थे। खुद, साक्षी के परिवार वाले भी उसे भला बुरा कह रहे थे।

कुछ लोग सलाह दे रहे थें, कि जब दूल्हे के पिता दो दिन बाद आएंगे, तब आप उन्हें बेटी को देते हुए माफी मांग लेना।

शायद तब तक उनका गुस्सा, शांत हो जाएगा।

देव, जो पूरे कार्यक्रम के दौरान वहीं खड़ा था, यह बात सुनकर खुद को बोलने से नहीं रोक पाया। उसने कहा- क्या आप लोगों का दिमाग ठीक है, आप लोग क्या उसे मरवाना चाहते हो? आप लोगों को सच में लगता है, कि वो लोग सब भूलकर आपकी बेटी को खुशी से अपना लेंगे।

साक्षी के पिता बोल पड़े- तो और हम क्या करें, इसने खुद हीं अपनी जिंदगी नरक बना ली है। अगर वह इतना सब कुछ नहीं बोलती, तो आराम से उस घर में अपने पति के साथ रहती।

देव ने उन्हें समझाते हुए कहा- अगर उसने यह सब नहीं किया होता, और शांति से उस इंसान के साथ चली जाती तो भी वह खुश नहीं रहती। क्योंकि वह लड़का ना तो उसकी परवाह करता, ना हीं उसे सम्मान देता। अगर देखा जाए तो यह आप लोगों की गलती है, जो आपने लड़के और उसके परिवार को बिना जाने समझे अपनी बेटी देने का फैसला कर लिया था।

यह सब सुनकर साक्षी, जो अभी तक वहीं किनारे में खड़ी थी, बोल पड़ी- और तुम जैसे लोगों का क्या? जो गलत होते हुए देखते रहते हो, पर समय पर किसी का साथ देने के लिए नहीं उठते। जब मैं अकेली उन लोगों से लड़ रही थी, तब तुमने क्यों नहीं कहा, कि यह लड़की सही कह रही है।

देव ने कहा- अगर तुम्हारे साथ कोई दुष्कर्म हो रहा होता तो मैं उन्हें रोकने जरूर आता, पर जब सिर्फ बातें हो रही हो तो मेरा बीच में आना या कुछ बोलना क्या सही होता? मेरे बीच में बोलने से, उल्टा तुम पर हीं और कीचड़ उड़ने लगता। और कई शादीयों में, ऐसे छोटे बड़े अपमान और लड़ाई झगड़ा आम हो गए हैं। कोई इन्हे सीरियस नहीं मानता। शुरुआत में मुझे लगा, कि तुम भी उन्हीं लड़कियों में से हो जिन्हें अपने सम्मान की कोई फिक्र नहीं होती। पर मैं गलत था, तुमने अपने लिए स्टैंड लिया। पर अभी भी, तुम्हारे हीं परिवार वालों को तुम्हारे खिलाफ देखकर मुझसे नहीं रहा गया। इतना कहकर देव वहां से चला गया।

अगले दिन कुछ रिश्तेदार अपने घर वापस चले गए, और कुछ इस विवाह का अंत देखने के लिए रुके हुए थें। कुछ लोगों की अगले दिन की टिकट थी, इसलिए वह भी घर पर थें। पर जो लोग भी जा रहे थें, वह साक्षी को माफी मांग लेने की सलाह देते हुए जा रहे थें। और कुछ लोग उसे, उसी के घर में बैठकर कोस रहे थें।

आस-पड़ोस के लोग तो, यहां तक कह रहे थें कि भगवान किसी को ऐसी बेटी ना दे। अपने मां-बाप की कोई परवाह हीं नहीं है इसे। बेचारे किसी को मुंह दिखाने के काबिल नहीं रहें। इसलिए कहते हैं, की बेटी को ज्यादा पढ़ाना-लिखाना नहीं चाहिए, नहीं तो ऐसे ही कांड होते हैं घर में।

साक्षी को बहुत बुरा लग रहा था। जो लोग कल तक उसकी हमेशा तारीफ करते रहते थें, अपने बच्चों को ट्यूशन पढ़ने के लिए उसके पास जबरदस्ती भेजा करते थें। वे भी आज उसके बारे में यह सब बातें कर रहे हैं। पर उसे अपने फैसले पर कोई पछतावा नहीं था।

उसने अगले दिन दूल्हे के पिता को फोन लगाया, और उनसे पैसे लेकर आने के बारे में पूछा। पर उनका कहना था, कि वह उसके घर पर नहीं आएंगे। पर अगर उसे पैसे चाहिए हो, तो वह उनके घर आकर ले जाए। साक्षी को पता था, कि घर वालों को यह बात बताने का कोई फायदा नहीं है। इसलिए उसने देव की मां से सलाह मांगी, की क्या उसे पैसे लेने का विचार को त्याग देना चाहिए?

देव की मां ने कहा- इसमें तो उनका हीं फायदा है। वह कुछ महीने बाद किसी दूसरी लड़की के परिवार वालों से भी दहेज लेंगे, और खुशी-खुशी अपने बेटे की शादी वहां करवा देंगे।

तब साक्षी ने कहा- क्या आप मेरे साथ पुलिस स्टेशन चलेंगी? मैं पुलिस वालों के साथ हीं उनके घर जाना चाहती हूं। देव की मां ने कहा- मैं चलूंगी, पर तुम्हारे परिवार वालों में से भी कोई होना चाहिए। वरना पुलिस वाले हमारी बात नहीं मानेंगे। वैसे अच्छी बात यह है, की शादी की कोई कानूनी दस्तावेज नहीं बनी है। और शादी वाले दिन हीं रिश्ता टूट गया है। वरना पुलिस वाले भी पहले इस रिश्ते को चलाने पर जोर डालते, या कम से कम 6 महीने तक का समय निर्धारित कर दिया जाता।

अभी यह बातें चल ही रही थीं कि साक्षी का भाई कमरे में आया, और कहा- दीदी क्या तुमने सच में फैसला कर लिया है, कि तुम उनके घर

कभी नहीं जाओगी? साक्षी ने सीधे-साधे लफ्जों में, 'नहीं' कह दिया। यह सुनकर उसके भाई ने कहा- तब फिर उनसे अपना पैसा वापस लाने वाली बात, तुम मुझ पर छोड़ दो। जब मम्मी पापा को भी यह कंफर्म हो जाएगा कि इस रिश्ते के बारे में उन्हें भूल जाना चाहिए, तब मैं उनके साथ जाकर हमारे पैसे ले आऊंगा।

जब तक इधर यह बातें हो रही थीं, उधर रिश्तेदारों के कहने पर साक्षी के पिता ने, दूल्हे के पिता से माफी मांगने के लिए फोन लगाया। ताकि वे साक्षी को आकर अपने घर ले जाएं। पर दूल्हे के पिता ने उन्हें खूब खरी-खोटी सुनाई, और साक्षी द्वारा फोन लगाने की बात सबको पता चल गई।

रिश्तेदारों के घर में रहते हुए आखिर कोई बात दूसरों को पता ना चले, ऐसा हो सकता है क्या? कुछ लोगों ने साक्षी, और देव की मां के बीच होने वाली बातचीत भी सुन ली थी। बस, घर में फिर से शोर-शराबा शुरू हो गया।

सब ने अब देव की मां को भी सुनाना शुरू कर दिया, कि वह साक्षी को अपनी गलती सुधारने की सलाह देने की बजाय उसे सपोर्ट कर रही हैं। फेरों से पहले भी यह उसे भड़का रही थीं। देव को जब यह बात पता चली, तो उसने वहां से तुरंत जाने का फैसला कर लिया।

अभी वह निकले भी नहीं थें, कि उन्हें सुनाई दिया कि एक आदमी साक्षी के पिता से कह रहा था। मैं तो कहता हूं, अपनी बेटी को घर से निकाल दो। कुछ ही दिनों में रोते हुए वापस आ जाएगी, और फिर जैसा आप बोलोगे वैसा करेगी। बड़े पंख निकल आए हैं इसके, यहां मां-बाप सोच रहे थें कि लड़के वालों के घर जाकर उनसे माफी मांग कर इसका घर बसा

दिया जाए, पर इसने तो फिर से उन्हें पैसों की बात कह कर गुस्सा दिला दिया।

उस आदमी की बातें सुनकर बाकी लोग भी उसका साथ देने लगे। और इतने में हीं साक्षी के पिता बोल पड़े- हमने सच में इसे बहुत बिगाड़ दिया है। किस्मत बदलना चाहती थी ना तू, जा वैसे भी यहां रहकर तेरा कुछ नहीं होने वाला। और कोई दूसरा परिवार तो तुझे अपनाएगा नहीं। तो जा और जाकर खुद सामना कर इस संसार का। जब तुझे अकेला पाकर सब तेरा फायदा उठाना चाहेंगे, तब तुझे समझ आएगा कि एक लड़की के लिए शादी कितनी जरूरी है।

अपने पिता की बात सुनकर साक्षी रोते हुए बोली- पापा, यह दुनिया वाले अकेली लड़की को देखकर उसका फायदा इसीलिए उठाते हैं, क्योंकि सब सिर्फ लड़कियों को ही संस्कार की शिक्षा देते रहते हैं। लड़कों को कोई संस्कारी नहीं बनाता। अगर लड़के कहीं जॉब करें, अकेले रहें, तो उन्हें देखकर लड़कियां तो उन पर बुरी नजर नहीं रखती, ना दुनिया वाले उन्हें कुछ कहते हैं। पता है क्यों? क्योंकि लड़कियां अब तक हैवान नहीं बनीं, और उन्हें खुद पर संयम रखना आता है। तो अगर एक लड़की आजादी से अपनी जिंदगी नहीं जी सकती, या घूम फिर नहीं सकती, तो इसमें लड़कों का दोष है, ना की लड़कियों का।

इतने में वह इंसान फिर से बोल पड़ा- जब पता है कि यह दुनिया कैसी है, तो लड़कियों को चुपचाप दुनिया वालों की बात मान लेनी चाहिए। वरना उनके साथ बुरा हीं होता है। साक्षी ने थोड़े कड़े आवाज में कहा- मतलब आप भी मानते हैं कि यह दुनिया कितनी बुरी है, और इसे बुरा बनाने वाले आप जैसे लोग हीं हैं।

यह सुनकर वह आदमी, आग बबूला होते हुए बोला- बस बहुत हुआ, हम अपनी बेइज्जती करवाने के लिए यहां नहीं थें। और अब तो हममें से कोई भी इस घर में दोबारा नहीं आएगा, अगर यह लड़की यहां रही।

यह सुनते हीं साक्षी के पिता ने रोते हुए कहा- तू यहां से जा रही है, या हमें इस समाज से बेदखल करवाना चाहती है। इतना सब होने के बाद भी अगर हमने तुझे अपने घर में रखा, तो कोई हमारे मरने पर भी हमारी चौखट पर नहीं आएगा।

साक्षी की मां रोने लगी। उन्होंने अपने पति को समझाने की कोशिश की, और सबसे गिड़गिड़ाते हुए कहा- मेरी बेटी को माफ कर दीजिए, आखिर वह इस घर को छोड़कर कहां जाएगी। देव की मामी ने भी, अपने भाई को समझाने की कोशिश की। पर वह साक्षी के कमरे में गए, और उसका पर्स जिसमें उसके जरूरी कागजात थें उसे लेकर बाहर आएं।

और साक्षी को पकड़ाते हुए कहा- यह लो अपना पर्स, अपने सारे कागजात और तुम्हारे कमाए हुए जो भी पैसे हैं उसे लेकर, अभी के अभी निकल जाओ।

साक्षी को भी समझ आ गया था, कि सिर्फ बोलने से काम नहीं चलेगा। बल्कि, उसे सच में अपने दम पर जीवन गुजार कर दिखाना होगा। वह कमरे में गई, और अपने जरूरी सामान पर्स में डालने लगी। साक्षी की मां थोड़ी देर बाद उसके कमरे में आईं, और उसे दस हजार रुपए पकड़ाते हुए कहा- यह वही पैसे हैं, जो तुमने मुझे अपनी मेहनत से कमा कर दिए थें। इस पर तुम्हारा हक है, इसे रख लो तुम्हारे काम आएंगे।

दोनों मां-बेटी की आंखों में आंसू थें। साक्षी ने अपनी मां को गले लगाया। उसकी मां ने कहा- अगर तुम्हें कोई परेशानी हो तो तुम हमें कॉल जरूर करना, और मुझे अपने बारे में बताती रहना। साक्षी ने सिर्फ हां में जवाब दिया और जाने लगी।

बाहर अभी भी देव और उसकी मां खड़े थें। देव की मां ने साक्षी से पूछा- कहां जाओगी? कुछ सोचा है। साक्षी ने ना में सिर हिलाया। उसे पता था कि वह अपने दोस्तों के यहां भी नहीं जा सकती, आखिर वह उनके यहां कितने दिन रहती। और क्या उनके माता-पिता, उसे रहने की इजाजत देते? इसलिए उसने थोड़ा सोच कर कहा- बस इस जगह से दूर जाना है, जहां मुझे कोई जानता ना हो।

देव की मां ने कहा- तो अभी तुम हमारे साथ चलो, इस तरह तुम्हारे अपने जो तुम्हारी चिंता करते हैं, उन्हें पता रहेगा कि तुम सुरक्षित हो। साक्षी ना कहने हीं वाली थी, कि तभी देव के मामा-मामी वहां आ गये। उन्होंने साक्षी को, उनके साथ जाने की सलाह दी। साक्षी ने भी अपनी बुआ की बात मान ली। क्योंकि उसे इन सभी घटनाओं के दौरान यह पता चल गया था, कि देव और उसकी मां बुरे लोग नहीं हैं। और इस तरह उसे अपने लिए सोचने का कुछ समय भी मिल जाएगा। इसलिए वह उन दोनों के साथ देहरादून चली आई।

दो दिनों बाद देव वापस केरल चला गया। साक्षी ने भी अपने लिए, पास के एक मॉल में जॉब ढूंढ ली। इसी तरह 1 साल बीत गए। इस बीच, साक्षी की बुआ यानी देव की मामी जी का कॉल अक्सर आया करता था। और उनके जरिए हीं, दो-चार बार साक्षी ने अपनी मां से भी बात की थी।

मार्च 2025

एक दिन अचानक हीं, देव की मामी जी का कॉल आया। उन्होंने बातों बातों में देव की मम्मी से पूछा- क्या आप लोगों ने देव की शादी का कुछ सोचा है? देव की मां ने कहा- अभी तो वह ट्रेनिंग हीं कर रहा है, जब उसकी जॉब हो जाएगी तब सोचा जाएगा। देव की मामी जी ने कहा- आप लोग साक्षी को लेकर जब उसके घर से निकले थें, तो मेरी भाभी के पास-पड़ोस वालों और कुछ रिश्तेदारों ने भी यह सब देखा था। और अब वह तरह-तरह की बातें बना रहे हैं। इसलिए मेरे मायके वाले चाहते थें, कि आप लोग साक्षी को बहू के रूप में अपना लें।

देव की मां ने, उन्हें समझाते हुए कहा- आप लोगों को भी पता है कि देव यहां नहीं रहता, तो किसी के कुछ भी बोलने से क्या फर्क पड़ेगा। देव की मामी जी ने कहा- हां मुझे पता है, पर उसे आपके घर में रहते एक साल से भी ज्यादा हो गया है। आपको लगता है, कि हम यह बात दुनिया वालों को समझा पाएंगे। और साक्षी को क्या आप लोगों जैसा कोई और परिवार मिल पाएगा? जो इतना सब होने के बाद भी उसे अपने घर में प्यार और इज्जत दे।

देव की मां ने यह कहते हुए फोन रख दिया, कि जब देव आएगा तो मैं उससे बात करके देखूंगी। क्योंकि शादी उसे करनी है, और अगर उसे पहले से कोई पसंद हुई तो मैं उस पर कोई जोर जबरदस्ती नहीं करने वाली।

अगले दिन, देव ने अपनी मां को एक खुशखबरी देने के लिए फोन किया। उसे इसरो में कार्य करने के लिए चुन लिया गया था। और इसलिए वह

बेंगलुरु जाने से पहले, कुछ दिनों के लिए वहां आ रहा था, ताकि वह एक साथ होली मनाते हुए इस खुशी को सेलिब्रेट कर पाएं।

होली वाले दिन, देव की मामी जी ने होली की बधाई देने के लिए फिर से देव की मम्मी को फोन किया। और फिर साक्षी से भी उसका हाल-चाल लिया। साक्षी ने अपनी मां से बात करने के लिए, उन्हें फोन लगाने को कहा। बातों बातों में, साक्षी की मां ने उससे पूछा- तू वहां खुश तो है ना? साक्षी ने हां में जवाब दिया।

उसकी मां ने फिर साक्षी को, देव की मम्मी को फोन देने के लिए कहा। साक्षी ने भी उन्हें फोन पकड़ाते हुए कहा- मेरी मां आपसे कुछ बात करना चाहती है।

पहले भी एक बार साक्षी की मां ने, देव की मां को धन्यवाद कहने के लिए उनसे बात की थी। इसलिए साक्षी को कोई हैरानी नहीं हुई। पर साक्षी की मां, देव की मां पर उन दोनों की शादी करवा देने पर जोर डाल रही थी। उनका कहना था, कि देव ने अगर किसी और लड़की से शादी की तो उनके रिश्तेदार फिर उनका मजाक उड़ाएंगे। और साक्षी पर भी कीचड़ उछाली जाएगी। साक्षी के पिता ने भी कह दिया है, कि अगर उसे आप लोगों ने बहू के रूप में स्वीकार कर लिया, तभी वह उसे माफ करने के बारे में सोचेंगे, वरना वह उससे कोई वास्ता नहीं रखेंगे।

यह सब सुनकर तो साक्षी के होश उड़ गए। देव की मां ने फोन स्पीकर पर रखा था, क्योंकि उन्हें पहले से ही लग रहा था कि शायद साक्षी की मां उनसे शादी की बात करेंगी। और वह इस बात से, उन दोनों को अंजान नहीं रखना चाहती थी। क्योंकि फैसला उन्हें हीं करना था।

सारी बातें सुनकर साक्षी ने फोन लेते हुए, अपनी मां से कहा- मां आप यह कैसी बातें कर रही हैं, आप किसी पर दबाव कैसे डाल सकती हैं? साक्षी की मां ने पूछा- तुम हीं बताओ, क्या कोई और परिवार तुम्हें अपनी बहू बनाएगा, जब तुम पिछले एक साल से भी ज्यादा समय से, किसी और के घर पर रह रही हो। और अगर तुम उन लोगों को छोड़ देती हो, तो क्या तुम्हें जीवन में कभी किसी बात का कोई पछतावा नहीं रहेगा। या तुम पूरा जीवन अकेले, बिना किसी परिवार और सहारे के बिताना चाहती हो?

साक्षी के पास इन सवालों के कोई उत्तर नहीं थें, इसलिए वह चुप हो गई। देव ने भी उनकी सारी बातें सुन ली थीं। उसने साक्षी के हाथों से फोन लेकर, उसकी मां को यह कहते हुए फोन रख दिया, की साक्षी अब उनकी जिम्मेदारी है, तो उन्हें चिंता करने की, या उसे कोई नसीहत देने की कोई जरूरत नहीं है।

देव की मां ने यह सुनकर, देव से पूछा- तुम्हें पता है ना, तुमने अभी-अभी जो कहा उसका क्या मतलब है। देव ने कहा- हम इस बारे में बाद में बात करेंगे। फालतू में सबका मूड खराब हो गया है, और मुझे भूख भी लग रही है। यह कहता हुआ वह अपने कमरे में चला गया, और आशी को कॉल लगाया।

आशी ने जैसे हीं फोन उठा कर हेलो कहा, देव ने उसे बताया कि वह शादी कर रहा है। आशी ने दो सेकंड रुक कर पूछा- क्या सच में? या तुम मेरे साथ फिर से कोई मजाक कर रहे हो? देव ने सीरियस आवाज में कहा- नहीं यह सच है। आशी के पूछने पर, की क्या यह वही लड़की है जिसके

बारे में आंटी ने बताया था, जो तुम लोगों के घर में रह रही है, देव ने हां में जवाब दिया।

आशी ने उसे बधाई देते हुए कहा- चलो अच्छा है कि तुम्हें एक समझदार और बोल्ड लड़की मिल गई है, वरना तुम्हारे जैसे पागल को झेलना किसी आम लड़की के बस की बात नहीं है। देव ने आशी से पूछा- तुम्हें कोई प्रॉब्लम नहीं है? आशी ने कहा- मुझे कोई प्रॉब्लम क्यों होगी? बल्कि मुझे तो वह लड़की तभी पसंद आ गई थी, जब आंटी ने उसके बारे में बताया था।

देव ने कहा- तुम्हें पता है ना, कि हमें लेकर हमारी मम्मीयां क्या बातें करती थी। आशी ने कहा- हां पर वह बचपन की बातें थीं, और हमने कभी एक दूसरे से कोई वादा नहीं किया था। बस हमने एक वादा किया था, जिंदगी भर दोस्ती निभाने का। और अगर तुम उस समय दिल्ली नहीं आते, तो शायद वह भी खत्म हो चुका होता।

हां मैं यह मानती हूं, कि अगर तुमने मुझे कुछ महीने पहले शादी के लिए पूछा होता, तो मैं हां कर देती। क्योंकि किसी दोस्त से अच्छा पति कोई हो हीं नहीं सकता। क्योंकि दोस्ती अगर पुरानी हो, तो हमें अपने दोस्त की खूबियां, खामियां, व्यवहार और परिवार सब के बारे में पहले से पता होता है। इसलिए मुझे यकीन है, कि तुम्हें भी पता होगा कि अगर तुम आज मुझसे, हमारी शादी की बात करने के लिए फोन करते, तो मैं खुद तुम्हें मना करते हुए, उस लड़की से शादी करने के लिए कहती, जिसे तुमने अपने घर में सहारा दिया है।

देव ने कहा- मुझे पता था, पर मैं हमारे बीच कोई गलतफहमी या सीक्रेट्स नहीं रखना चाहता था। यह कहकर देव ने उसे होली की बधाई देते हुए फोन रख दिया।

देव को, 2030 वाले देव की अब सारी बातों का मतलब साफ-साफ समझ आ गया था, जो उसने शादी में जाने से पहले की थी। देव ने फ्यूचर वाले देव को फोन किया, और मां के हाथों का बना कुछ खाना पैक करके उससे मिलने चला गया।

देव जब उससे मिला तो उसने बताया, कि वह साक्षी से कुछ दिनों बाद शादी कर लेगा। और उसने यह बात आशी को बता दी है, ताकि उनके बीच कोई गलतफहमी ना हो और ना हीं कोई पछतावा। फिर उसने मां के हाथों का बना खाना, उसे देते हुए कहा- मुझे पता है कि तुम बाहर का खाना खाते-खाते बोर हो गए होगे। वैसे तुम यहां रह कैसे रहे हो?

छोटे देव के यह पूछने पर, देव (2030 वाला) ने उसे बताया- कि वह भी यहां पर गुजारा करने के लिए, एक मैकेनिक का काम कर रहा है। पर उसे चिंता करने की कोई जरूरत नहीं है, क्योंकि वह इस शहर में कम रहता है, तो यहां इस शक्ल को पहचानने वाले बहुत कम लोग हैं। वह आराम से बेंगलुरु में जाकर अपने सपनों पर ध्यान दे सकता है।

छोटा देव वापस घर आया, और अपना फैसला सुनाते हुए साक्षी से उसकी राय मांगी। उसने पूछा- क्या उसे इस फैसले पर कोई आपत्ति है? साक्षी चुप थी। उसे कुछ ना कहता देख, देव ने कहा- मुझे वैसे भी बेंगलुरु में जाकर लगभग एक महीने लगेंगे खुद को वहां सेटल करने के लिए, तब तक तुम सोच कर जवाब दे देना।

रिसर्च वगैरह में बिजी रहने के कारण, मुझे पता है कि मेरा यहां आना-जाना और भी कम हो जाएगा। इसलिए अगले महीने से हम सब बेंगलुरु में हीं रहेंगे।

देव के बेंगलुरु जाने के बाद, साक्षी ने देव की मां से पूछा- क्या देव की लाइफ में कोई और लड़की नहीं है? देव की मां ने उसे आशी के बारे में सब कुछ बता दिया, और यह भी कहा कि तुम दोनों के बारे में आशी को पता है। और उसे इस रिश्ते से कोई प्रॉब्लम नहीं है, क्योंकि वह बहुत समझदार और सुलझी हुई लड़की है।

साक्षी ने, आशी से एक बार बात करने की इच्छा जाहिर की। देव की मां ने उसे आशी का फोन नंबर दे दिया। आशी ने उसे यह बताया, कि वह लोग सिर्फ दोस्त हैं और वह बिना किसी चिंता के देव से शादी कर सकती है। और वह कोशिश करेगी, की शादी के बाद उससे और दूरी बना सके। साक्षी ने उसे ऐसा कुछ करने से मना किया। क्योंकि उसे उनकी दोस्ती तोड़ने का इल्जाम नहीं लेना था। आशी ने उसे बताया, कि वैसे भी उन दोनों में बहुत कम बातचीत होती है, तो उसे यह सब सोचने की जरूरत नहीं है।

एक महीने बाद साक्षी और देव की शादी हो गई। और वे बैंगलोर जाकर रहने लगें। आशी ने भी देव से थोड़ी दूरियां बना ली। देव की मां ने देहरादून में हीं रहने का फैसला किया।

गर्मी की छुट्टियों में, आशी ने अपने दोस्तों के साथ मसूरी जाने का प्लान बनाया। वहां पहुंचने पर उसे एक पल के लिए लगा, जैसे उसने देव को देखा हो। उसने देव की मम्मी को फोन लगा कर पूछा, कि क्या देव मसूरी

आया है? उसकी मां ने मना करते हुए कहा, मेरी तो अभी-अभी उन लोगों से बात हुई है। वह बेंगलुरु में हीं हैं।

जिस पर आशी ने सोचा, शायद कोई और इंसान होगा जिसका चेहरा देव से थोड़ा बहुत मिलता होगा। पर आशी को नहीं पता था कि वह देव हीं है, पर फ्यूचर से आया हुआ। जो पहली बार अपना मन बहलाने के लिए, गलती से वहीं आ गया जहां वह आई हुई थी।

देव को भी शायद इसका अंदाजा हो गया था, इसलिए उसने मास्क पहन लिया। पर किस्मत ने उनके साथ मजाक करने का जैसे फैसला हीं कर लिया था। दोनों ने रात में रुकने के लिए एक हीं होटल चुना था। देव ने मास्क लगाया हुआ था, पर फिर भी आशी को लग रहा था कि उसने उसे कहीं देखा है। इसलिए जब वह उसके पास से गुजरा, तो आशी ने उसे रोका।

देव को समझ नहीं आ रहा था कि वह क्या करे। तब तक आशी को याद आया, कि आज से 3 साल पहले ट्रेन में लगी आग के दौरान, जिसने उनकी मदद की थी यह शायद वही है। हैरानी की बात यह थी, कि आशी को इसे देखकर देव की भी याद आ रही थी।

आशी ने उससे पूछा, की क्या उसे वह याद है? देव, नहीं कहते हुए जाने लगा। पर आशी ने उसे अपना मास्क हटाने के लिए कहा, और उसके पीछे जाने लगी। यह देखकर, देव और जल्दी-जल्दी अपने कमरे की ओर जाने लगा। आशी को यह थोड़ा अजीब लगा।

उसने रिसेप्शन पर जाकर उसके बारे में जानकारी लेने की कोशिश की। रिसेप्शन वालों ने उसे बस इतना बताया, कि वह शायद इसरो में काम करते हैं। पर इससे ज्यादा उन्होंने बताने से मना कर दिया।

आशी को पता नहीं क्यों, पर कुछ अजीब लगा। इसलिए उसने देव के कमरे का बेल बजाया। देव ने दरवाजा खोला, पर सामने आशी को देखकर वह वापस दरवाजा लगाने लगा। आशी ने अचानक उसे देव कहकर पुकारा, तो देव सोचने लग गया कि उसने मास्क तो लगाया है ना। इतने में आशी ने उसका मास्क हटा दिया।

दोनों एक दूसरे को घूरते हुए, चुपचाप कुछ देर तक वहीं खड़े रहें। फिर आशी ने पूछा- यह सब क्या हो रहा है, क्या तुम मुझे कुछ बताओगे? देव ने उसे अंदर आने के लिए कहा, और उसे पूरी सच्चाई बता दी। देव ने सोचा, कि आशी को इस बात पर बिल्कुल विश्वास नहीं होगा।

पर पूरी बात सुनकर आशी ने पूछा- वैसे, तुम और कब तक यहां पर रहने वाले हो? देव ने 2030 बताते हुए, उससे पूछा- मैंने जो कहा तुम्हें उस पर विश्वास है? आशी ने हां में जवाब देते हुए बताया, कि उसने भी एक बार टाइम ट्रेवल किया था, इसलिए वह यकीन कर सकती है।

देव के पूछने पर उसने बता दिया, कि अप्रैल 2022 में मिलने की डेट उसने पास्ट में जाकर हीं उसे दी थी। थोड़ी देर बाद कमरे से निकलते हुए आशी, अचानक मुड़ी और देव से कहा- तुम इतने सालों से अकेले हो, और अभी भी पांच साल बाकी हैं तुम्हारे गायब होने में, तुम्हें नहीं लगता कि तुम्हें किसी दोस्त की जरूरत होगी? जिससे तुम बात करना चाहो।

तुम्हें मेरा नंबर तो याद होगा ना, तो जब मन करे फोन कर लेना। यह कहते हुए वह अपने कमरे में चली गई।

अगस्त 2030

आशी ने अपनी वह ब्लू वाली साड़ी पहनी, जो देव की मम्मी ने उसे 2016 में फेयरवेल में पहनने के लिए गिफ्ट की थी, और देहरादून के लिए निकल गई। उसने वहां पहुंचकर देव (फ्यूचर वाले) को एक कॉफी शॉप में बुलाया। उसने देव को बताया, कि उसे एक फेमस टीवी शो 'सोशल मीडिया डांसिंग स्टार' के लिए चुना गया है, तो उसे कॉम्पीटिशन के आखिरी कुछ राउंड के लिए मुंबई जाना होगा। देव ने उसे बधाई देते हुए कहा- तुम सोशल मीडिया स्टार तो बन हीं चुकी हो, और यह टाइटल पाने के बाद तुम और बड़ी स्टार बन जाओगी।

आशी ने कहा- मतलब मैं यह कॉम्पीटिशन जीत जाऊंगी, राइट? देव मुस्कुरा दिया। थोड़ी देर की बातचीत के बाद जब आशी जाने लगी, तब देव ने कहा- यह लास्ट बार है जब मैं तुम्हें इस साड़ी में देख रहा हूं, सच में यह सिर्फ हमारे फेयरवेल के लिए ही बना है। आशी ने पूछा- मतलब जब तक मैं मुंबई से वापस आऊंगी, तुम गायब हो गए रहोगे? देव ने मुस्कुराते हुए हां कहा। दोनों ने एक दूसरे को आखरी बार गले लगाया, और अलविदा कहकर अपने-अपने रास्ते चल दिए।

12 सितंबर 2030 बेंगलुरु

साक्षी के कहने पर देव ने, आशी को उसकी जीत पर बधाई देने के लिए फोन किया। आशी और देव की, लगभग पांच साल बाद बात हो रही

थी। पर उन्हें एक दूसरे के बारे में, उनकी मां से पता चलता रहता था। और एक दो-बार तो, खुद साक्षी ने आशी को कॉल किया था। उसने अपनी बेटी, अन्वी के जन्म के समय भी आशी को कॉल करके, आने के लिए कहा था। पर बिजी होने के कारण, आशी नहीं आ पाई थी।

थोड़ी देर के बाद देव ने आशी को बाय कहते हुए फोन रख दिया। और इसरो हेडक्वार्टर के लिए निकल गया। रास्ते में उसे याद आया, कि वह कल डॉक्टर खन्ना से मिलने उनके रिसर्च सेंटर जाने वाला था। इसलिए, वो पहले उनसे मिलने हीं चला गया। रिसर्च सेंटर पहुंचने पर जब डॉक्टर खन्ना ने उसे पास्ट में जाने के लिए पूछा, तो देव ने मना कर दिया।

उसने पूछा- आपने एक बार बताया था कि इसका परीक्षण हो चुका है, तो फिर से परीक्षण करने की क्या जरूरत है? डॉक्टर खन्ना ने कहा- मैंने 1 घंटे वाला परीक्षण एक लड़की पर किया था, पर अब मैं एक ऐसा इंसान चाहता हूं, जो लंबे समय के लिए पास्ट में जाकर वापस आए। ताकि मेरा तारीख वाला कॉन्सेप्ट सही है या नहीं पता चल जाए, और वहां रहने के अनुभव के बारे में भी।

इसके बाद, मैं फ्यूचर में जाने के कॉन्सेप्ट पर काम करूंगा। पर मेरा अब तक का मानना है, कि अगर हम वर्तमान से भविष्य में जाने की कोशिश करें तो यह सफल नहीं रहेगा। क्योंकि भविष्य अभी बनकर तैयार नहीं हुआ है। पर अगर ऐसा होता है, तो हमें यह मान लेना चाहिए कि हम भूतकाल में जी रहे हैं।

डॉक्टर खन्ना बोले जा रहे थें, पर शायद देव कुछ और हीं सोच रहा था। डॉक्टर खन्ना ने देव को आवाज दी, तब देव ने अपने ख्यालों से बाहर

आते हुए कहा- पता नहीं मुझे ऐसा क्यों लग रहा है, जैसे मैं कल आपको कुछ बताना चाहता था। पर आज मुझे सही से कुछ भी याद नहीं है।

कल मुझे हेड क्वार्टर से निकलने में थोड़ी देर हो गई थी। रास्ते में मुझे अजीब सा महसूस हुआ, और अचानक ही ऐसा लगा मानो दिमाग में जल्दी-जल्दी में कोई फिल्म चल रही हो। और सर में दर्द होने लगा था, इसलिए मैं कल वापस घर चला गया था। पर जब मैं कल यहां आया हीं नहीं, तो मुझे ऐसा क्यों लग रहा है कि मैंने पास्ट में जाने का अनुभव लिया हो?

डॉक्टर खन्ना ने सारी बातें सुनने के बाद कहा- मतलब मेरी तारीख़ वाली थ्योरी सही है। ऐसा हो सकता है कि तुम, पिछली बार यहां कल, यानी 11 सितंबर को आए थे और पास्ट में भी गए थे। पर इस बार तुम कल यहां आए हीं नहीं, तो पास्ट में जाने वाला देव रहा हीं नहीं, तो उसकी यादें भी नहीं रहेगी।

देव ने कहा- पर मुझे ऐसा लग रहा है, जैसे मैंने पिछले कई सालों से अपने जैसे दिखने वाले इंसान से बातें की हों, या खुद को सलाह दिया हो, कि अब मुझे क्या करना चाहिए और क्या नहीं।

डॉक्टर खन्ना ने कहा- क्या तुम्हें अपनी कही हुई बात याद है? तुमने हीं कहा था, कि हम अगर पास्ट में जाकर कुछ चेंज करना चाहें, तो हमें खुद कुछ नहीं करना चाहिए, बल्कि उस समय में रहने वाले अपने ही वर्जन से करवाना चाहिए। क्योंकि हम जो हो चुका है उसे नहीं बदल सकते, पर जो हो रहा है उसे जरूर बदल सकते हैं। इसलिए जब वर्तमान वाले देव ने सब कुछ खुद हीं किया, तो उसका फ्यूचर भी चेंज हो गया और फिर, वह

कभी पास्ट में गया हीं नहीं, तो उसे यही लगेगा कि शायद उसने अपने हीं मन की सुनी और सब कुछ सही किया।

डॉक्टर खन्ना की बातें सुनकर देव ने कहा- हो सकता है ऐसा हीं हो, पर अब मुझे वापस पास्ट में नहीं जाना। आपको अपने रिसर्च के लिए किसी और को ढूंढ लेना चाहिए। शायद मैं अपनी पिछली जिंदगी में खुश नहीं था, पर मुझे अब जो जिंदगी मिली है, मुझे नहीं लगता कि मुझे कुछ बदलने की जरूरत है। ऐसा कहकर वह इसरो हेडक्वार्टर के लिए निकल गया।